।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 139 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका दिसम्बर– 2019 30/–प्रति

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

अवतरण दिवस जोधपुर

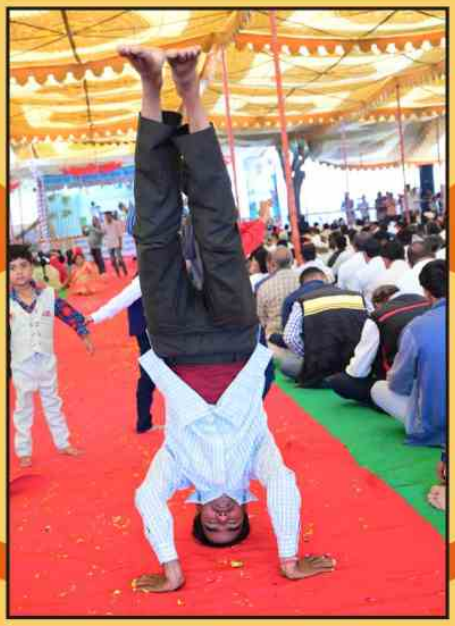

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 139 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका दिसम्बर – 2019

वार्षिक 300/– द्विवार्षिक : 600/– आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– मूल्य 30/–

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 001
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

सिद्धयोग की देन–शक्तिपात दीक्षा....4
मैं हर युग में प्रकट होता हूँ (सम्पादकीय)....5
सतयुग का प्रारम्भ–24 नवम्बर 2019....6–7
सद्गुरुदेव का प्रवचन....8
सात्विक शक्ति द्वारा पथप्रदर्शन....9
एकमात्र सारभूत वस्तु....10–11
सद्गुरुदेव सियाग सिद्धयोग....12–16
चित्र पृष्ठ....17–23
समन्वय किससे....24–25
समाचारों की सुर्खियों में....26–28
योग के आधार....29
योगियों की आत्मकथा....30
योग के बारे में....31
Beginning of my Spiritual Life....32
सिद्धयोग....33
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....34
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ....35
शंका समाधान....36
शेष पृष्ठ सम्पादकीय....37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

सिद्धयोग की देन-शक्तिपात दीक्षा

मैं, एक भगवें वस्त्र-धारी "अर्ड पंथी" नाथ का शिष्य हूँ। मेरे मुक्तिदाता सद्गुरुदेव, बाबा श्री गंगाई नाथ जी "योगी" के दिशानिर्देशों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के लोगों को "शक्तिपात-दीक्षा" देने हेतु विश्व में निकला हूँ। भारत में मेरे शिष्यों की संख्या लाखों में है। उनमें विज्ञान के हजारों, इंजिनियर, डाक्टर एवं अन्य वैज्ञानिक सम्मिलित हैं। इस योग से सभी ने सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग पूर्ण-रूप से नष्ट हो रहे हैं क्योंकि यह परिवर्तन सम्पूर्ण मानव-जाति में समानरूप से हो रहा है; अतः इसमें जाति-भेद एवं धर्म परिवर्तन जैसी कोई समस्या नहीं है। इसमें साधक अपने स्वयं के धर्म में रहता हुआ, इस योग की साधना कर सकता है। योगदर्शन में इसे "सिद्धयोग" की संज्ञा दी है। इसमें सभी प्रकार के योग सम्मिलित हैं, अतः इसे "महायोग" भी कहा जाता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

मैं हर युग में प्रकट होता हूँ

उत्थान और पतन प्रकृति का अटल नियम है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का 94 वाँ अवतरण दिवस जोधपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। हजारों साधकों ने इस पावन दिवस का आनंद उठाया। गुरुदेव ने वर्षों पहले यह घोषणा कर दी थी कि 24 नवम्बर 2019 से सतयुग की शुरूआत होगी और अब हम सब इस पवित्र युग में संजीवनी मंत्र जप और गुरुदेव के ध्यान से अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सकते हैं। इस पावन पर्व की समस्त मानव जाति को हार्दिक शुभकामनाएँ और संस्था की तरफ से यह संदेश- कि इस सनातन सत्य की अनुभूति, सद्गुरुदेव सियाग के बताए पथ पर चलने से ही संभव है।

भारत की पवित्र भूमि पर हर युग में भगवान् अवतार लेते हैं, जिनका वर्णन सद्गुरुदेव सियाग ने अपनी दिव्य लेखनी से किया है-

''कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। यही कारण है कि संसार की हर वस्तु में, क्षण-क्षण में परिवर्तन हो रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के पाँचवे श्लोक में अर्जुन से स्पष्ट कहा है:-

बहूनि मे व्यतीतानि
जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि
न त्वं वेत्थ परंतप।। 5।।

हे अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं। हे परंतप उन सब को तूं नहीं जानता है, मैं जानता हूँ।

अजो पि सन्नव्ययात्मा
भूतानामी श्ररो पि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय
संभवाम्यत्ममायया।। 6।।

(मैं) अविनाशी स्वरूप अजन्मा होने पर भी, सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी, अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 7।।

हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ।

परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे।। 8।।

साधु पुरुषों का उद्धार करने और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट होता है कि सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग की आवृत्ति अनादि काल से चली आ रही है। बहुत बार हिरण्यकष्यप, रावण और कंस आदि जन्म चुके हैं और बहुत बार ईश्वर अवतरित हो चुके हैं। यह क्रम अनादि काल से निरन्तर चला आ रहा है। इस प्रकार चारों युगों की आवृत्ति बहुत बार हो चुकी है।

भगवान् श्रीकृष्ण के यह कहने का कि मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, का स्पष्ट अर्थ निकलता है कि ऐसे महाभारत युद्ध बहुत बार हो चुके हैं। इससे महर्षि श्री अरविन्द की यह भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित होती है कि :- ''24 नवम्बर 1926 को श्री कृष्ण

शेष पृष्ठ 37 पर...

www.the-comforter.org

सतयुग का प्रारम्भ-24 नवम्बर 2019

हिन्दू अवतारों की श्रृंखला अपने आप में मानो क्रम विकास का रूपक है-1-सर्वप्रथम मत्स्यावतार हुआ, जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ। 2. फिर पृथ्वी पर थल व जल के स्थल-जलचर 'कच्छप' का अवतरण हुआ। 3. तृतीय अवतार 'वाराह' के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई। 4. 'नृसिंह' अवतार पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है। फिर 5 वें मनु, 6वें वामन, 7वें परशुराम, 8 वें राम और 9 वें श्री कृष्ण आदि अवतरित हुए, जो निरन्तर प्राणमय, राजसिक से सात्विक, मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने।

दसवें अवतार का अवतरण -24 नवम्बर 1926

''पृथ्वी पर 24 नवम्बर 1926 को कल्कि का अवतरण हुआ। अवतरित उस शक्ति ने 24 नवम्बर 1968 से अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया एवं 50 वर्ष तक कार्य कर संपूर्ण मानव जाति को 'एक नई चेतना' से अनुप्राणित कर दिव्य रूप में रूपान्तरित कर देगी। इस प्रकार 24 नवम्बर 2019 से सतयुग प्रारम्भ होगा।''

सद्गुरुदेव को आराधना में जो सिद्धि हुई उनको श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां ने अपने शब्दों में लिखा-

सन् 1968-शक्तिशाली और लम्बे समय तक अंदर तक आने वाली अतिमानसिक ताकतें, सारे शरीर में, एक ही समय में, एक साथ प्रविष्ट करते हुए -जैसे पूरा शरीर उन ताकतों से नहा गया हो, जो पूरे शरीर में एक साथ एक ही समय में प्रविष्ट हुईं - सिर से गले का निचला हिस्सा सबसे कम ग्रहणशील है। (श्री माँ ने 26-27 नवंबर, 1968 के एक नोट में यह लिखा था)

एक जनवरी 1969 रात 2 बजे

एक चेतना पृथ्वी के वायुमंडल में उतरी और वही स्थापित हो गई । यह एक सबसे अद्भुत अवतरण था, जो प्रकाश, बल, शक्ति, आनंद और शांति से भरा हुआ था और पूरी पृथ्वी पर फैल गया था । इस वर्ष के प्रारम्भ से ही एक नईचेतना, मनुष्य को अतिमानव में परिवर्तित करने के लिए, पृथ्वी पर कार्यरत है। यह निर्माण संभव हो इसके लिए, वह पदार्थ जो मनुष्य के शरीर का निर्माण करता है, उसे एक बड़े परिवर्तन से गुजरना होगा। इसके लिए उस चेतना के प्रति अधिक ग्रहणशील होना होगा । अलौकिक सृष्टि में कोई धर्म नहीं होंगे।

सम्पूर्ण जीवन एक अभिव्यक्ति होगा, पुष्पित होगा उस दिव्य चेतना के रूप में। और जिन्हें मनुष्य भगवान कह कर बुलाते हैं, वो सब नहीं होगा। ये महान् दिव्य प्राणी स्वयं नई सृष्टि में भाग लेने में सक्षम होंगे, लेकिन इसके

लिए उन्हें पृथ्वी पर अतिमानसिक पदार्थ रखना होगा। और अगर कुछ ऐसे हैं जो अपनी दुनिया में बने रहना पसंद करते हैं, जैसे कि वे हैं, अगर वे खुद को शारीरिक रूप से प्रकट नहीं करने का फैसला करते हैं तो पृथ्वी पर सर्वोच्च दुनिया के अन्य प्राणियों के साथ उनके संबंध समान रूप से, सहकर्मियों के, मित्रों के संबंध होंगे, बराबर के सम्बन्ध, क्योंकि उच्चतम दिव्य शक्ति पृथ्वी पर नई सर्वोच्च दुनिया के प्राणियों में प्रकट हुई होगी।

जब भौतिक पदार्थ अतिमानसिक में परिवर्तित हो जायेगा, तो पृथ्वी पर एक शरीर में जन्म लेना हीनता का कारण नहीं होगा, बल्कि इसके विपरीत, एक ऐसी स्थिति प्राप्त होगी जो अन्यथा प्राप्त नहीं की जा सकती थी।

www.the-comforter.org

वह सब भविष्य का है, एक ऐसा भविष्य जो शुरू हो चुका है लेकिन खुद को अभिन्न रूप से साकार करने से पहले कुछ समय लगेगा। इस बीच, हम एक बहुत ही खास स्थिति में हैं, बेहद खास, जिसकी कोई मिसाल नहीं है।

हम एक नई दुनिया के जन्म में भाग ले रहे हैं, पूरी तरह से युवा, पूरी तरह से कमजोर-असल सार में कमजोर नहीं, लेकिन इसकी बाहरी अभिव्यक्ति में-पहचाना नहीं गया है, अभी तक महसूस नहीं किया गया है,

अधिकांश द्वारा नकारा गया है लेकिन वह है, वह बढ़ने के लिए प्रयासरत है और परिणाम के बारे में सुनिश्चित है। फिर भी वहाँ पहुँचने के लिए ये एक नई सड़क है, जो पहले कभी नहीं देखी गई थी। कोई भी उस रास्ते से नहीं गया, किसी ने भी ऐसा नहीं किया। यह एक शुरुआत है, एक सार्वभौमिक शुरुआत है। इसलिए यह एक साहसिक कार्य है जो बिल्कुल अप्रत्याशित है।''

इस पावन वेला पर, सत्य के युग में गुरुदेव के 94 वें अवतरण दिवस पर उनकी दिव्य वाणी में प्रवचन सुनने के बाद 15 मिनट ध्यान किया गया।

गुरुदेव ने कहा था कि महायोगी मत्स्येन्द्र नाथ जी के आदेश से सूर्यनगरी जोधपुर में आया। 10 मई 1993 को अपनी संस्था अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की स्थापना की। पूरी दुनिया को सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित करने के लिए गुरुवार, 25 दिसम्बर 1997 को संस्था की वेबसाइट **www.the-comforter.org** लांच की गई। आज पूरे विश्व में यह वेबसाइट 124 से भी ज्यादा देशों में देखी जा रही है। 24 नवम्बर 2018 से 24 नवम्बर 2019 तक 5 लाख 28 हजार से ज्यादा बार वेबसाइट देखी जा चुकी है। जिनके मन में अपने आपको समझने की जिज्ञासा है, कोई परेशानी से पीड़ित है, और जिनके भौतिक दुनिया के सारे प्रयास धराशाही हो गए हैं, ऐसे जिज्ञासुजन जब गुरुदेव के बताए सिद्धयोग अपनाते हैं, उनको यह सत्य मिल रहा है।

आज संस्था की वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल देखकर हजारों-हजारों लोग ध्यान कर रहे हैं। प्रति दिन ऐसे दर्जनों कॉल आते हैं, जो सिद्धयोग दर्शन को समझने के लिए पिपासु हैं। हजारों लोगों को सत्य की अनुभूति हो रही है, इस प्रकार हम सतयुग में प्रवेश कर गये हैं।

धरणी तू धन्य हुई,
धरा कल्कि ने चरण।
पीड़ा सब मिटती गई,
दिव्य हुआ ये जीवन-मरण।।

www.the-comforter.org

''कल्कि की तलवार''

एक अकेले वीर का संकल्प हजारों कायरों के हृदय में साहस फूँक सकता है।

वस्तुतः कोई भी व्यवस्था स्वयं अपने जोर से वह परिवर्तन नहीं ला सकती, जिसकी मानवता को यथार्थ आवश्यकता है; क्योंकि वह जब विकसित होकर अपनी उच्चतर प्रकृति की संभावनाओं को सुदृढ़ रूप से प्राप्त कर लेगा तभी आ सकता है, **और यह विकास बाह्य नहीं, एक आंतरिक परिवर्तन पर निर्भर है।** पर बाह्य परिवर्तन कम से कम उस अधिक यथार्थ सुधार के लिए अनुकूल परिस्थितियों तो तैयार कर ही सकते हैं-या इसके विपरीत वे ऐसी परिस्थितियाँ ला दें जिससे केवल **''कल्कि'' की तलवार** ही पृथ्वी को एक उद्दण्ड आसुरी मानवता के भार से मुक्त कर सके। चुनाव स्वयं मानवजाति के ही हाथ में है; क्योंकि जैसा वह बोयेगी वैसा ही वह अपने कर्म का फल पायेगी।''

संदर्भ- महर्षि श्री अरविन्द
''भारत का पुनर्जन्म''पृष्ठ-157-58

कल्कि--''अंतिम अवतार, जो सफेद पंखों वाले घोड़े पर आरूढ़ होकर, तलवार लेकर आता है। यह जलते हुए धूमकेतू के जैसा आएगा।''

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

यह मानवीय धर्म है तो इस प्रकार जो नाम जप व ध्यान से आप में यह परिवर्तन आएगा। अब मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप क्यों माना है? एक चीज तो आपको मालूम है-पाँच तत्त्वों से शरीर बना है-आकाश, वायु, अग्नि,जल और पृथ्वी। सारा ब्रह्माण्ड आप के अन्दर है। **जो ब्रह्माण्ड में है, वह पिण्ड में है, जो पिण्ड में है वह ब्रह्माण्ड में।** जब सारा ब्रह्माण्ड आप में है तो फिर आकाश तत्त्व तो ऊँचे ही ऊँचे स्थान को कहेंगे। इसको योगियों ने सहस्रार की संज्ञा दी है। योग की भाषा में आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा 'शब्द'।

हमारे संतों और ऋषियों ने इसे पकड़ा और उसका नाम रख दिया-'ॐ'। बाकी किसी धर्म ने नहीं पकड़ा। उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार किसी ने नहीं किया, सिवाय वैदान्तियों के। अब देखिए 'ॐ' अर्थात् ईश्वर-आकाश की सूक्ष्म तन्मात्रा। वो 'ॐ' रूप बदलता हुआ नीचे आ रहा है, आकाश से वायु प्रकट होती है उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्पर्श, वायु से अग्नि प्रकट हुई तो उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्वरूप, अग्नि से जल प्रकट हुआ उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा स्वाद, जल से पृथ्वी प्रकट हुई उसकी सूक्ष्म तन्मात्रा गंध, इस प्रकार पृथ्वी में पाँचो तत्त्व हैं और पृथ्वी से हम सब पैदा हुए। इस तरह से वह परम तत्त्व 'ॐ' अथार्त् ईश्वर रूप बदलते-बदलते इस (मनुष्य) रूप में आकर बैठ गया। इसलिए मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप माना है।

अब इस प्रक्रिया को उलट दो, एक-एक तत्त्व को जीतते हुए, ऊपर उठते हुए, यहाँ अपने असली स्वरूप में क्यों नहीं बदल जाता। सांईटिफिक बात है। एक प्रोसेस से इस रूप में आया, दूसरे प्रोसेस से असली फॉर्म में बदल जाओगे। **कुण्डलिनी जाग्रत होकर उर्ध्वगमन करती हुई सहस्रार में पहुँचती है, उसी का नाम मोक्ष है।** वह आपको असली फॉर्म में बदलवा देगी। जिसका नाम जप रहे हो, उसी के रूप में परिवर्तित हो जाओगे। तब तक मौत पीछा नहीं छोड़ेगी। मोक्ष कोई काल्पनिक स्थिति नहीं है, वह तो वस्तु स्थिति है, क्रियात्मक बदलाव आता है।

मैंने लाखों को यह करके बता दिया तो इस प्रकार यह नाम जप और ध्यान करोगे, उससे आपकी भौतिक समस्याओं का समाधान हो जाएगा As well as आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान हो जाएगा। बाहर और अन्दर का विकास एक साथ होगा।

यही एक ऐसी आराधना है, जहाँ कुण्डलिनी जागरण का विषय (Subject) है। इसमें भोग और मोक्ष दोनों साथ चलते हैं, बाकी जितनी भी आराधनाएँ हैं, उनमें भोग है तो मोक्ष नहीं, मोक्ष है तो भोग नहीं; एक का त्याग करना पड़ता है। इसमें त्याग नहीं, इसमें गीता वाला निष्काम कर्म योग है तो इस तरह से मैंने जानकारी दी आपको कि यह तो बहुत विशाल दर्शन है। पूरी व्याख्या करना किसी के वश की बात नहीं है। मोटे-मोटे सिद्धान्त मैंने आपको बताए कि मनुष्य में यह परिवर्तन आराधना से आ सकता है।

❖❖❖

www.the-comforter.org

सात्विक शक्ति द्वारा पथप्रदर्शन

"धर्म प्रत्यक्षानुभूति का विषय है। इसमें उपदेश और अन्य भौतिक चमत्कार होते ही नहीं।" जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अन्धकार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है और किसी को कुछ भी वस्तु दिखाने की जरूरत नहीं होती, हर व्यक्ति स्वतः ही स्वयं हर वस्तु को देखने में सक्षम हो जाता है।

उस परम सत्ता से जुड़े हुए संत के साथ क्षणभर ही सत्संग करने से मनुष्य के अन्दर ऐसी रोशनी प्रकट हो जाती है कि उसे बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। **उसका पथप्रदर्शन स्वयं सात्विक शक्तियाँ करने लगती हैं** क्योंकि प्रकाश होने पर अंधेरा भाग जाता है, ठीक वैसे ही उस व्यक्ति में सात्विक शक्तियों के चेतन होते ही तामसिक शक्तियाँ कोसों दूर भाग जाती हैं।

the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

एकमात्र सारभूत वस्तु

''नाम जप ही इस आराधना में आगे बढ़ने का ठोस आधार है।''

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

योग मार्ग पर आरूढ हुए साधकों के सामने आराधना करने पर विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ, शंकाएँ और कुछ विकट मोड़ आते हैं, जहाँ पर उनकी स्थिति लड़खड़ा जाती है। यदि समर्थ सद्गुरुदेव की कृपा नहीं हो तो वह आराधना पथ पर फिसल जाता है। योग मार्ग की अनेक बातें हैं, जो आराधना शुरू करते ही सारी की सारी साधक को बता दी जाए, यह संभव नहीं है ! क्योंकि उसे केवल जिन जिन चीजों की प्रथम दृष्ट्या आवश्यकता होती हैं सिर्फ वे ही सद्गुरु द्वारा बताई जाती है। आराधना करने पर बाकी अनेक अनुभव और ज्ञान साधक के स्वयं के अनुभव द्वारा स्वतः ही प्राप्त होता है।

यदि योग शुरू करते ही सारा ज्ञान एक साथ दिया जाये तो वैसा ही होगा जैसा प्रथम बार विद्यालय में प्रवेश कर रहे 5-6 वर्ष के बच्चे को, पी.एच.डी धारी, विज्ञान के उच्चतम स्तर के फार्मूले समझाने लगे ! इसलिए गुरुदेव ने पूरी दुनिया में बदलाव के लिए कहा कि-**''एक नाम को जपो, नाम जप से परिवर्तन आएगा।'' जब कोई साधक चाहे वो किसी भी धर्म या जाति का हो, स्त्री या पुरुष हो, संजीवनी मंत्र को सघन जपेगा तो आगे का विकास स्वतः ही शुरू हो जाएगा और हो रहा है।**

शिकायतें दोनों ही तरह की आ रही हैं-किसी का इतना गहरा ध्यान लगता है और देर तक खुलता नहीं है, उनकी शिकायत रहती है कि अब गुरुदेव मुझे माफ कर दें, मेरा ध्यान कम कर दें। और दूसरी शिकायत रहती है कि मेरा ध्यान लगता नहीं है जबकि मैं मंत्र जप कर रहा हूँ, बहुत समय हो गया है, मुझ पर गुरुदेव की कृपा नहीं हो रही है। साधकों से अपेक्षा है कि शक्ति भरपूर वेग से अपना कार्य कर रही है-संपूर्ण मनोवेग से, एकाग्र होकर, गुरुदेव द्वारा बताए मंत्र का सघन जप और नियमित रूप से ध्यान करते रहें। अपने **प्रारब्ध** के अनुसार आपका अपना विकास होता जाएगा।

इसलिए महर्षि श्री अरविन्द ने भी अपने योगारूढ़ मार्ग के आध्यात्मिक अनुभवों का जिक्र किया है, साधकों के ज्ञान बोध के लिए यहाँ दिया जा रहा है और सद्गुरुदेव सियाग का सिद्धयोग मार्ग-**एक नई सड़क है,** जिस पर अभी तक कोई नहीं चल पाया है, सृष्टि में प्रथम बार हो रहा है-किसी को भी, कुछ भी संभावना और अनुभव नहीं है। इसलिए जैसा गुरुदेव ने बोला है, वैसा हुबहू करने से, रति भर भी हेरफेर नहीं करने पर ही पार पड़ेगी। इस आराधना में आगे बढ़ने का सर्वोत्तम पथ है-**''जैसा गुरुदेव ने बताया अक्षरशः उसका पालन करना।''**

> **''मुझे सदा ही ध्यान द्वारा अनुभूति पहले प्राप्त हुई और शुद्धि बाद में, उसके परिणामस्वरूप शुरू हुई। मैंने बहुत लोगों को ध्यान के द्वारा महत्त्वपूर्ण, यहाँ तक कि मूलभूत अनुभव प्राप्त करते देखा है, पर उनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि उनका आंतरिक विकास बहुत हो चुका है। क्या वे सभी योगी, जिन्होंने सफल रूप में ध्यान किया और अपनी अंतश्चेतना में महान् अनुभव प्राप्त किये, अपनी प्रकृति में पूर्ण थे ? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। इस क्षेत्र के पूर्ण-सार्वभौम सिद्धांतों पर मैं विश्वास नहीं कर सकता।''**

श्री अरविन्द के शब्दों में-''मुझे मालूम नहीं **'क'** ने क्या कहा अथवा किस लेख में कहा, वह लेख मेरे पास नहीं है। किन्तु उसका कहना अगर यह है कि कोई भी व्यक्ति तब तक सफलतापूर्वक ध्यान नहीं कर सकता, कोई अनुभूति नहीं प्राप्त कर सकता जब तक कि वह पवित्र और पूर्ण न हो जाय तो मैं इस समझने में असमर्थ हूँ:

यह मेरे अपने अनुभव के विरुद्ध है। मुझे सदा ही ध्यान द्वारा अनुभूति पहले प्राप्त हुई और शुद्धि बाद में, उसके परिणामस्वरूप शुरू हुई। मैंने बहुत लोगों को ध्यान के द्वारा महत्त्वपूर्ण यहाँ तक कि मूलभूत अनुभव प्राप्त करते देखा है, पर उनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि उनका आंतरिक विकास बहुत हो चुका है। क्या वे सभी योगी, जिन्होंने सफल रूप में ध्यान किया और अपनी अंतश्चेतना में महान् अनुभव प्राप्त किये, अपनी प्रकृति में पूर्ण थे? मुझे तो ऐसा नहीं लगता। इस क्षेत्र के पूर्ण-**सार्वभौम सिद्धांतों** पर मैं विश्वास नहीं कर सकता।

कारण, **अध्यात्म-चेतना** का विकास अतीव विशाल एवं जटिल कार्य है जिसमें सब प्रकार की चीजें घटित हो सकती है और यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य के लिये यह विकास उसकी प्रकृति के अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार का होता है और एकमात्र आवश्यक वस्तु है-**आंतरिक पुकार, अभीप्सा** तथा **इसकी सिद्धि के लिये निरन्तर प्रयास करते रहना।** इसकी परवाह नहीं कि इसमें कितना समय लगता है तथा क्या-क्या कठिनाइयाँ या बाधाएँ इसके मार्ग में आती हैं? क्योंकि और किसी चीज से हमारे अंदर की अंतरात्मा संतुष्ट नहीं हो सकती।

''यदि आरम्भ से ही पूर्ण, समर्पण, श्रद्धा इत्यादि का होना योग के लिये अनिवार्य होता तो इसे कोई भी न कर पाता। यदि मुझसे ऐसी अवस्था की माँग की गयी होती तो मैं भी योग न कर पाया होता.....।''

सर्वप्रथम ठोस अनुभव

अधिक गंभीर एवं आध्यात्मिक अर्थ में ठोस अनुभव वह है, जो अनुभूत वस्तु को हमारी चेतना के सामने किसी स्थूल पदार्थ की अपेक्षा कहीं अधिक सत्य, सजीव और घनिष्ठ रूप में उपस्थित करता है। सगुण भगवान् या निर्गुण ब्रह्म अथवा आत्मा का ऐसा अनुभव साधारणतया साधना के प्रारम्भ में या शुरू के वर्षों में किंवा अनेक वर्षों तक भी प्राप्त नहीं होता। इतना शीघ्र ऐसा अनुभव विरलों को ही प्राप्त होता है, मुझे ऐसा अनुभव लन्दन में प्राप्त, प्रथम पूर्व-यौगिक अनुभव के पन्द्रह वर्ष बाद तथा योग आरम्भ करने के पाँचवे वर्ष में उपलब्ध हुआ।

इसे मैं असाधारण रूप से तीव्र, लगभग एक्सप्रेस ट्रेन की-सी गति समझता हूँ, यद्यपि कुछ लोगों को, निस्सन्देह, इससे भी जल्दी उपलब्धियाँ हुई होगी। परंतु इसकी इतनी शीघ्र आशा एवँ माँग करना किसी अनुभवी योगी या साधक की दृष्टि में एक अविवेकपूर्ण एवं असामान्य अधीरता का ही सूचक समझा जायेगा। अधिकतर योगी यही कहेंगे कि प्रारंभिक वर्षों में साधक अधिक-से-अधिक एक मन्द विकास की ही आशा कर सकता है और सुनिश्चित अनुभव तो केवल तभी प्राप्त हो सकता है जब प्रकृति तैयार हो जाय और पूर्ण रूप से भगवान् की ओर एकाग्र हो जाय।

-महर्षि श्री अरविन्द
जून 1934

साधक का प्रश्न :-क्या यह ठीक है कि जिन्हें साधना आरम्भ करने से पूर्व भगवत्कृपा द्वारा प्राप्त एक सुनिश्चित झांकी के द्वारा अपनी आध्यात्मिक शक्यता का स्पष्ट ज्ञान हो चुका हो, केवल वे ही अपने पथ पर अंत तक डटे रहने में समर्थ होते हैं, और जिन्हें ऐसी कोई झांकी प्राप्त नहीं हुई होती वे कोई अनुभव भले ही प्राप्त कर लें पर साधना पथ पर दृढ़ रहने में समर्थ नहीं होंगे?

श्री अरविन्द का जवाब:-

कम से कम मुझे तो योग आरम्भ करने से पूर्व ऐसी कोई भी झांकी प्राप्त नहीं हुई थी। दूसरों के बारे में, मैं नहीं कह सकता-शायद कइयों को यह प्राप्त हुई हो-परंतु झांकी केवल श्रद्धा ही उत्पन्न कर सकती है, संभवतः ज्ञान को लाना उसके बस की बात नहीं है; ज्ञान तो योग करने से ही प्राप्त होता है, उससे पूर्व नहीं।

मैं फिर दुहरा दूँ कि सिर्फ इतना ही जानने की जरूरत है कि व्यक्ति की अन्तरात्मा योग की ओर प्रेरित हो चुकी है या नहीं।

क्या तुम यह समझते हो कि बुद्ध या कन्फयूशस या स्वयं मैं इस पूर्वदृष्टि को लेकर जन्मा था कि वे या मैं आध्यात्मिक जीवन अपनाऊँगा? जब तक मनुष्य साधारण चेतना में होता है, वह साधारण जीवन बिताता है। जब जागृति और नई चेतना आती है तो वह उसे छोड़ देता है-इसमें चकराने वाली बात कोई भी नहीं।

श्री अरविन्द 27 अप्रेल 1936
'अपने विषय में' पुस्तक
पृष्ठ-81-83

गतांक से आगे...

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur, Gurudev Siyag SiddhaYoga Avsk) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में वाट्सऐप व फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

कलकता (प. बंगाल)
श्री विजय कुमार व्यास
22.10.2019

मूलतः बीकानेर के निवासी हैं। पिछले कई वर्षों से कलकता में रह रहे हैं। 7-8 दिन पहले यू-ट्यूब पर गुरुदेव के वीडियो देखकर बहुत प्रभावित हुए और वीडियो में बताई गई विधि के अनुसार मंत्र जप और ध्यान किया तो बहुत अच्छा लगा। कई लोगों को इस बारे में जानकारी दी गई। स्वयं के कम्प्यूटर सर्विस की दुकान है। वहाँ दिन भर बहुत लोग आते हैं। और आने वाले लोगों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दे रहे हैं। इनको आश्रम से प्रचार सामग्री भेजी गई।

मुम्बई (महाराष्ट्र)
डॉ. प्रिया
23.10.2019

मुम्बई में फीजिशियन डॉक्टर है। सांई बाबा की परम भक्त है। कल यू-ट्यूब पर अचानक गुरुदेव का वीडियो खुल गया। सुनकर इतनी प्रभावित हुई और मन में इतना भाव उमड़ा कि अभी फ्लाईट पकड़ कर जोधपुर आश्रम जाकर, गुरुदेव के चरण छू लू। गुरुदेव के प्रति बहुत गहरी श्रद्धा बन गई। फिर दूसरे दिन जोधपुर आश्रम में कॉल करके गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी ली।

मैनपुरी (उ.प्र)
शिवम कुमार-24 वर्ष
24.10.2019

सन् 2014 में छत गिरने से सिर पर भारी चोट लग गई थी। फिर चलना फिरना बंद हो गया।सब कुछ परिवार वाले सेवा करते हैं। जीवन बहुत दुभर हो चुका था। एक दिन अचानक यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा और जीवन में नई आशा जगी है। अब मंत्र जप और ध्यान शुरू किया है।

गांधी नगर (गुजरात)
श्री रामगोपाल काबरा-45 वर्ष
24.10.2019

उन्होंने कहा कि '' जो दस सालों में नहीं मिला, वो दस दिन में मिल गया-गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग से। मैंने बहुत मंत्र जप, ध्यान, आसन और हठयोग की क्रियाएँ की लेकिन कोई आध्यात्मिक अनुभूति नहीं हुई। मैं घण्टों ध्यान में बैठता था पर कुछ भी महसूस नहीं हुआ। शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक ध्यान तक ध्यान में बैठता था, ऐसे 4 साल तक आराधना की। गुरुदेव का वीडियो देखकर, मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया और शरीर में जबरदस्त गर्मी महसूस हुई। बहुत अनुभव हो रहे हैं। इतनी खुशी हो रही है कि बोलने के लिए, महिमा के लिए, मेरे पास कोई शब्द नहीं है। ऐसे परम सद्गुरुदेव के पावन चरणों में नमन् करता हूँ।

दिल्ली
श्रीमती भुवनेश्वरी नाथान
-58 वर्ष
30.10.2019

उन्होंने कहा कि -''मैं हार्ट की मरीज हूँ। 7 साल से कृत्रिम पेशमेकर मशीन लगी हुई है। दो साल पहले पति देव का स्वर्गवास हो गया। दो बेटियाँ ससुराल चली गई। दो बेटे हैं, वे भी शादीशुदा है, जो मेरे से बहुत दूर रहते हैं। मैं घर पर अकेली ही नारकीय जीवन जी रही थी। घर का सारा काम स्वयं ही करना पड़ता था। कमर सीधी नहीं होती थी। चलने फिरने में बहुत दिक्कत थी। एक हाथ उठ नहीं पाता था। अकेलापन सता रहा था। दिल की पीड़ा दिल में ही भोग रही थी। अपनी व्यथा किसे सुनाऊँ? कोई सुनने वाला था ही नहीं। जीवन में किसी का कोई साथ नहीं।

मन बहलाने के लिए यू-ट्यूब पर वीडियो देख रही थी। अचानक गुरुदेव का वीडियो खुल गया। मैं देखने लग गई तो उनके प्रवचनों से मैं बहुत प्रभावित हुई। फिर मैंने उनके कई

www.the-comforter.org

वीडियो देखे और जीवन में कुछ नया और आत्मा को शकून देने वाला ज्ञान मिल गया। मंत्र जप और ध्यान लगाना शुरू कर दिया।,

एक दिन आश्रम पर कॉल करके बताया कि ''मैं 10 दिन से गुरुदेव के संजीवनी मंत्र का जप और नियमित 15-15 मिनट सुबह-शाम ध्यान कर रही हूँ। मैं हार्ट की मरीज हूँ। फिर कहा कि ''मैं पहले हार्ट की मरीज थी, अब नहीं हूँ। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मेरी कमर दर्द की तकलीफ समाप्त हो गई। मेरा एक हाथ नहीं उठता था वो भी पूरी तरह ठीक हो गया। मेरे जीवन में बहुत ही तीव्र गति से बदलाव आया है। पहले मैं अकेली थी, मेरा कोई नहीं था, अब सद्गुरु मेरे साथ है। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मुझे ऐसे परम दयालू समर्थ सद्गुरु मिल गए।

इंग्लैण्ड

श्री शशिकान्त व्यास-63 वर्ष

30.10.2019

ये पिछले 30 वर्षों से इंग्लैण्ड में रह रहे हैं। इनका जन्म नैरोबी देश (दक्षिण अफ्रिका) में हुआ। इनके पिताजी का जन्म भी नैरोबी में ही हुआ। इनके पूर्वज करीब 100 साल पहले नैरोबी में आकर बस गये थे। ये मूलतः गुजरात के रहवासी थे। इनके पिछले एक साल से बी पी और शुगर की तकलीफ है। दो दिन पहले यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर मंत्र जप और ध्यान लगाना शुरू किया है। उन्होंने कहा-''मैं लगातार अभ्यास करूँगा तो कुण्डलिनी जागरण में सफल हो जाऊँगा।'' मेरे मन में विचार आया कि इनके आश्रम पर कॉल करके पुख्ता जानकारी प्राप्त करके ही यू-ट्यूब पर विश्वास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसलिए आज मैंने जोधपुर आश्रम पर कॉल किया है कि वास्तविकता क्या है? कृपया मुझे पूरी जानकारी से अवगत करायें कि मुझे आराधना कैसे करनी चाहिए?

फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी दी गई तथा पोस्ट से प्रचार सामग्री भी भेजी गई।

इराक

श्री हरिलाल गुप्ता

01.11.2019

देवरिया(उ.प्र) के मूल निवासी है। पिछले 6-7 महीने से इराक में है। पिछले 3 साल से हठयोग की क्रियाएँ कर रहे हैं। योग के प्रति गहरी रूचि है। यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर बहुत प्रभावित हुए हैं। पिछले कई दिनों से मंत्र जप और नियमित रूप से सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब पहले से बहुत अच्छा लगने लगा है।

जोरहट (आसाम)

मुक्तार अहमद

04.11.2019

उन्होंने कहा-कि ''मैं एक मुस्लिम हूँ। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा है।

क्या मैं मंत्र जप और ध्यान कर सकता हूँ?

क्या मुझे नमाज पढ़ना छोड़ना पड़ेगा?

क्या इस आराधना से जगत् से विरक्ति हो जाएगी?

मुझे थर्ड आई एक्टिव करानी है, मुझे क्या करना पड़ेगा?

इनको विस्तार से पूरी जानकारी दे गई तथा उनको बताया गया कि इस आराधना के लिए धर्म परिवर्तन की जरूरत नहीं है तथा न हीं नमाज छोड़ने की जरूरत है। अपने धर्म में रहते हुए, इस आराधना को कर सकते हो और जीवन में परिवर्तन आ जाएगा।

Goa गोवा

Cecilia Monteiro

4-11-2019

उन्होंने कहा कि ''वह कई तरह की परेशानियों से घिरी हुई है। सब तरह के प्रयास असफल हो गए। एक दिन यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो बहुत प्रभावित हुई और आत्मा को शकून मिला तब से मैंने मंत्र जप के साथ रोज सुबह-शाम 15-15 मिनट नियमित ध्यान करना शुरू कर दिया है। बहुत अच्छा लग रहा है।

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

रामशरण नायक-83 वर्ष

05.11.2019

उन्होंने कहा-'' मैं श्री ओशो, श्री शिवोमतीर्थ महाराज, आदि गुरु शंकराचार्य आश्रम से वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ। ओम नमो शिवाय का वर्षों से जप कर रहा हूँ। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में लाइब्रेरियन के पद पर था। भौतिक जीवन में खूब विकास किया है। बेटियाँ उच्च पदों पर नौकरी कर रही हैं। पर मुझे आध्यात्मिक ज्ञान की कमी खल रही थी। दो महीने पहले मेरा भाग्योदय हुआ और मुझे यू-ट्यूब पर गुरुदेव जी का वीडियो मिल गया। मैंने देखा और सुना तो मेरा रोम रोम हर्षित हो गया। करीब दो-ढाई महिने से मैं नियमित रूप से मंत्र जप के साथ ध्यान कर रहा हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। ध्यान में बैठते ही तीव्रगति से यौगिक क्रियाएँ

www.the-comforter.org

शुरू हो जाती हैं। कुछ दिन पहले सुबह ब्रह्ममुहूर्त में आँख खुल गई और मैं सघन मंत्र जप किये जा रहा था। अचानक मेरे मेरूदण्ड में करंट के जैसे झटके लगने लगे। और काफी देर तक ऐसी स्थिति रही। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

लंदन (इंग्लैण्ड)
श्री कृष्णा जी-49 वर्ष
06.11.2019

इन्होंने बताया कि-''मैं दमन दीव का रहवासी हूँ। लेकिन कई वर्षों से अब लंदन में रह रहा हूँ। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव जी का वीडियो देखा है। मैं पिछले 6-7 साल से योग की सिद्धि के लिए प्रयास कर रहा हूँ। मैंने थर्ड आई (तीसरी आँख) एक्टिव कराने के लिए कई साध-संतों से संपर्क किया था लेकिन मुझे कोई सफलता नहीं मिली। मुझे यह ज्ञान प्राप्त करना है। मैं जोधपुर आकर भी यह ज्ञान ले सकता हूँ। मेरा मार्गदर्शन करिए।''

फिर उनको विस्तार से सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई। और वाट्सअप से पूरी जानकारी भेजी गई।

इलाहाबाद (उ.प्र)
श्री संजय तिवारी-50 वर्ष
6.11.2019

श्री योगानंद जी के क्रिया योग से जुड़े हुए हैं। करीब दस साल तक विपश्यना का कोर्स भी किया। इनके तीन साथी थे जो आध्यात्मिक ज्ञान पिपासा के लिए खूब घूमे। उनमें से अब दो ही जगत् में रहे हैं। एक साथी संसार से विदा ले चुके हैं। एक साथी करोड़पति हैं लेकिन अभी उनको सद्गुरु नहीं मिले।

इन्होंने जब पहली बार यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखा तो आश्चर्यचकित रह गये। सोचा कि हम वर्षों से भटक रहे हैं और एक तरफ इतनी सहज,सरल साधना और फिर तीव्र गति से कुण्डलिनी का जाग्रत होना, कितना अद्भुत है !

गुरुदेव के मिलने से जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। मेरा पूरा कायाकल्प ही हो गया। सब तरह से मैल धुल गये। सब तरह के लालच गायब हो गए। समझने में देर नहीं लगी क्योंकि वर्षों से इस मार्ग से मंजिल पर पहुँचने के लिए थपेड़े खा रहे थे।

अभी 24 नवम्बर को अवतरण दिवस पर अपने परिवार के साथ जोधपुर आश्रम आकर अद्भुत लाभ प्राप्त किया। मन में असीम नीरवता छा गई।

मलाड वेस्ट (महाराष्ट्र)
10.11.2019

एच आई वी पोजीटिव मरीज है। कई टूने-टोटके, झाड़-फूँक करने वालों के पास गया। कई आश्रमों में मोटी रकम माँगी गई, जो यह उपलब्ध नहीं कर सका। आत्महत्या करने की सोच रहा था। देवसंयोग से यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो सुना तो जीवन की दिशा मुड़ गई। मंत्र जप और ध्यान करने से आनंद आने लगा। स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होने लगा। जिस दिन मंत्र जप के साथ ध्यान किया था तब मेडिकल टेस्ट में सीडी-4 -400 थी। 2-3 दिन सघन मंत्र जप के साथ सुबह -शाम ध्यान किया। फिर तीसरे जब सीडी-4 टेस्ट करवाया तो 900 आ गया तो उनको बेहद खुशी हुई। डॉक्टर रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया। फिर पूछा कि क्या दवाई खा रहे हो ? मैंने झूठ बोल दिया कि खा रहा हूँ। जबकि आज 20 दिन हुए हैं, दवाई बिल्कुल बंद है। लेकिन मेरी आंतरिक शक्ति बढ गई है। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। 28 नवम्बर को बात की।

मेडिकल में तो ऐसा तीव्र बदलाव किसी भी दवाई से नहीं आता है। अब नियमित आराधना कर रहा है। बहुत आनंद की अनुभूति हो रही है।

पटना साहिब (बिहार)
श्री जितेन्द्र सिंह
10.11.2019

इन्होंने बताया-मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर बहुत प्रभावित हुआ है। मैंने पहले से गुरु धारण कर रखा है। क्या मैं इनका ध्यान कर सकता हूँ ? तब इनको प्राचीन काल के गुरु दत्तात्रेय जी का उदाहरण देकर समझाया कि जब तक आत्मसंतुष्टि नहीं हो, तब तक प्रयास जारी रखना चाहिए। आप गुरुदेव का ध्यान शुरू कर दीजिएं। जहाँ बैठे हो, वहीं गुरुदेव के सामने झुक जाइए। गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र सुनना ही दीक्षा है। फिर उन्होंने कहा कि ''मुझे गुरुदेव की वाणी में बहुत प्रभावित किया है। मंत्र जप के साथ ध्यान करने की तीव्र उत्कंठा हो रही है लेकिन आत्मा में आया कि पहले आश्रम से पूरी जानकारी लेकर ही ध्यान किया जाएं।''

इनको विस्तार से सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई।

पालघाट कालपाड़ा (गोवा)
श्रीमती नंदिनी

www.the-comforter.org

11.11.2019

यू-ट्यूब से गुरुदेव का वीडियो देखकर, मंत्र जप के साथ सुबह-शाम 15-15 मिनट ध्यान शुरू किया है। अभी 2-3 दिन हुए हैं-मुझे खेचरी मुद्रा लग गई। दिन भर मुँह मीठा रहता है।

हल्दवानी (उत्तराखण्ड)
श्री हेमचन्द्र हेड़िया-37 वर्ष
12.11.2019

पेपरमील में काम करते हैं। यू-ट्यूब से जानकारी प्राप्त कर पिछले तीन महिने से ध्यान कर रहे हैं। आध्यात्मिक ज्ञान की पिपासा थी। बहुत अच्छा ध्यान लग रहा है। 12 नवम्बर को जोधपुर आश्रम आकर ध्यान किया। बहुत गहरा ध्यान लगा। दिन भर आश्रम में रहे और शाम को बोले कि अब मेरे जीवन में इससे बड़ा कोई तीर्थ नहीं है। अवसर मिलते ही पूरे परिवार के साथ आश्रम आकर ध्यान करूँगा।

जबलपुर (म.प्र)
श्रीमती अनुसुइया
13.11.2019

इन्होंने बताया कि "आज ध्यान का 5 वाँ दिन है। मेरा रोम रोम खिल उठा। पहले मुझे बहुत ज्यादा फायदा हुआ है। मैं मानसिक तनाव से ग्रसित थी। सिर दर्द होता रहता था। बहुत दुःखी थी। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो सुना और सुनते सुनते ही मेरे सिर की दांयी तरफ के निचले हिस्से से कोई तरंग सी उठी और सिर के ऊपरी हिस्से तक गई और सिर दर्द गायब।

आज पाँच दिन तो हो गए, बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ। वर्षों का सिर दर्द खात्म हो गया। मेरा एक ऐसा असंभव काम था वो भी गुरुजी की कृपा से सफल हो गया। मैं इस ध्यान को बहुत ही गहराई से ले रही हूँ। मैं जोधपुर आकर गुरुदेव के दर्शन करना चाहती हूँ। फिर उनको बताया गया कि 24 नवम्बर को गुरुदेव का अवतरण दिवस है, आप आ सकती हो।

आश्रम से उनको प्रचार सामग्री भेजी गई है। उसने बहुत से लोगों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी है। समय समय पर आश्रम में कॉल करके जानकारी लेती रहती है।

सहरसा (बिहार)
श्री आशीष कुमार-26 वर्ष
13.11.2019

इन्होंने बताया-"आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए अभी तक 12-13 गुरु तो कर चुका हूँ। जब सातवीं कक्षा में पढ़ता था तब पहली बार खेचरी मुद्रा लगाने का अभ्यास किया था। जिसने जैसा बताया वैसा करता गया। पूजा-पाठ, माला-मंत्र, हठयोग की क्रियाएँ आदि सभी कर्मकाण्ड किये हैं पर वो ही ढाक के तीन पात, परिणाम नहीं मिला। आत्मसंतुष्टि नहीं मिली। सभी धर्मगुरु बहुत अच्छी बातें करते हैं लेकिन प्रायोगिक रूप से कोई भी करके नहीं दिखाता है। यू-ट्यूब से गुरुदेव का वीडियो सुना तो प्रभावित हुआ। मन सोचा बातें तो सभी अच्छी करते हैं, पर इतनी सटीक बात तो मैंने किसी से भी नहीं सुनी। मन विचार आया कि कितना भी झूठ होगा तो भी कुछ तो सच्चाई है। इसलिए मैंने आश्रम पर कॉल करके जानकारी प्राप्त की है।

धनबाद (झारखण्ड)
श्री वी के शर्मा-42 वर्ष
13.11.2019

मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव जी का वीडियो देखा है। मुझे इस दर्शन को पाने की बहुत जिज्ञासा है।

मैंने सोचा कि पूरी जानकारी लेकर ही सही ढंग से आराधना शुरू करूं ! फिर आश्रम से उनको पूरी जानकारी भेजी गई।

मैंक्सिको सिटी (U S A)
-Charly Broown
15.11.2019

इन्होंने बताया-सिद्धयोग दर्शन के प्रति गहरी रूचि है। अपने जीवन विकास के लिए नेट पर जानकारी ढूँढ़ रहा था। यू-ट्यूब पर गुरुदेव के वीडियो सुनकर प्रभावित हुआ। मेरी मातृभाषा स्पेनिश है। अंग्रेजी की बहुत कम जानकारी है। इसलिए गूगल से रूपांतरण कर काम चला रहा हूँ। अब मुझे लगा कि मेरे जीवन का बहुत सारा समय व्यर्थ चला गया। अब मुझे अपना विकास करना है। मैं संजीवनी मंत्र का जप कर रहा हूँ।

आजमगढ़ (उ.प्र)
श्री जोगिन्द्रराय-69 वर्ष
15.11.2019

पिछले 40 वर्षों से भक्तिभाव और साधना कर रहा हूँ। शायद उसी का परिणाम है कि अब मुझे गुरुदेव मिल गये। यू-ट्यूब पर गुरुदेव का वीडियो देखकर मंत्र जप के साथ ध्यान करना शुरू कर दिया है। बहुत सुन्दर। बहुत अच्छा लग रहा है। आत्मा गद्‌गद हो गई। **नाभि के आसपास जलन हो रही है, गुदगुदी हो रही है।** मैंने लोगों को बताना शुरू कर दिया है। मुझे कुछ प्रचार सामग्री मिल जाये तो गुरु

www.the-comforter.org

महाराज का प्रचार करूं, ऐसी मन में जिज्ञासा है। मेरा मार्गदर्शन करिए। फिर उनको आश्रम से प्रचार सामग्री भेजी गई। अभी दो-तीन दिन पहले ही पार्सल मिला है। वापस मैंसेज भेजा कि प्रचार सामग्री मिल गई है। मैं मेरे आसपास पड़ोस में सबको गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बता रहा हूँ। अब बहुत अच्छा लग रहा है।

उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
श्री बागसिंह
16.11.2019

इन्होंने बताया कि-मैं नियिमत आराधना कर रहा हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है। गुरुदेव के ध्यान से पहले मैं हठयोग के तहत अनुलोम-विलोम आदि करता था तो क्या उसको अभी चालू रखूँ या बंद कर दूँ।''

उनको जवाब दिया कि आपको सिर्फ मंत्र जप और गुरुदेव के चित्र का ध्यान करना है। जिस क्रिया की जरूरत होगी वो क्रियाएँ कुण्डलिनी जाग्रत होने से स्वतः ही हो जाएगी।

फिर उन्होंने कहा कि मेरे एक मित्र है, मैंने उनको बतया और वे करने लगे तो शुरू में तो खूब आनंद आया, कुछ अनुभव भी नहीं हुए तो वो पूछ रहे थे कि अब क्या करें?

-उनको धैर्यपूर्वक आराधना करते रहना है। और ऐसा कुण्डलिनी अपने नियंत्रण में करवाती है। कभी ध्यान लगेगा, कभी नहीं लगेगा। साधक का काम है-नियमित आराधना करना।

हैदराबाद (तेलंगाना)
श्रीमती अरूणा -58 वर्ष
21.11.2019

इन्होंने बड़ी खुशी के साथ जोधपुर आश्रम में कॉल करके बताया-''मैं पिछले 20 दिन से सघन मंत्र जप के साथ सुबह-शाम 15-15 मिनट नियमित ध्यान कर रही थी। जब तक कोई अनुभूति नहीं हुई, मैं नहीं बोली। आज मुझे अद्‌भुत अनुभूति हुई। मैं ध्यान कर रही थी। बाहर की आवाजें भी आ रही थी और स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ शुरू हो गई। पन्द्रह मिनट तक लगातार होती रही और फिर स्वतः ही बंद हो गई। मुझे बहुत ताजूब हुआ कि कितना अद्‌भुत, आलौकिक है। अपने आप कैसे शुरू हो गई। और अपने आप बंद भी हो गई।

मुझे भीतर एहसास हुआ कि ये मेरे सब्र का फल है। यदि मैं एक-दो दिन करके, ये कहकर छोड़ देती थी कितना बड़ा अनर्थ हो जाता।

इस भटकाव को रोकने का काम किया आश्रम से भेजी गई मासिक पत्रिका स्पिरिचुअल साइंस ने। उसमें बहुत से साधकों के अनुभव लिखे हुए थे कि साधक धैर्यपूर्वक आराधना करता रहे, उनको जरूर अनुभूति होगी। इसलिए मैं भरोसा करके जैसा गुरुदेव जी ने बताया वैसा करती रही।

आज मुझे बहुत आनंद मिला। बहुत आनंद मिला। मैं यह पूछ रही हूँ कि अब मैं सब जगह प्रचार-प्रसार करूंगी तो लोग 15-20 दिन तक इंतजार करेंगे क्या? सब्र करेंगे क्या? जैसा मैंने किया और मुझे सब्र का फल मीठा अति मीठा मिला। **''कितना आश्चर्यचकित करने वाला अनुभव है?'' अपने आप होना, और अपने आप बंद होना और ऐसे लगा कि किसी दूसरे में घटना घट रही है और मैं देख रही हूँ। बिल्कुल अद्‌भुत! मेरा जितना फर्ज बनता है, उतना बोलूँगी।**

क्योंकि किसी का तो पहले दिन ही ध्यान लग जाता है लेकिन जिनका नहीं लगता है उनका क्या होगा?

तब उनको बताया गया कि हमारा काम बताना है। जिस साधक में जिज्ञासा है, वह स्वतः ही चेतना के स्तर पर जुड़ जाएगा। इसकी चिंता हमें नहीं करनी है। हमें तो निष्कपट भाव से बताना है।

उनके ही शब्दों-''मेरा इतना डीप ध्यान भी नहीं था। मेरे को आजू-बाजू की आवाजें आ रही थी, फिर भी मेरे को यौगिक क्रियाएँ हुई तो मेरे को रियल में बहुत ताजुब लगा, मैं इतनी डीप (गहरे) ध्यान में भी नहीं थी, और क्रियाएँ हुई। किती! गुरुजी की कृपा है, रियल में मानना ही पड़ेगा।''

Bulgaria and Israel Europian Country

23.11.2019

Namaste! Great to meet you

Use are coming to Jodhpur and we'd love to participate in your sessions

--Where are you from plz?

We are a couple from Bulgaria and Israel

--Gurudev Siyag's birthday on 24 Nov at 10.30 am Indian time

Wow amazing. We will still be in Jaipur though

But we are considering to go under meditation learning sessions around the 29th or 30th.

❖❖❖

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा-बाड़मेर के साधकों ने गुरुदेव की पूजा-अर्चना कर 15 मिनट ध्यान लगाया। साधकों का कहना था कि अंसख्य ऋषि-मुनियों, संतों की दिव्य चेतना को गुरुदेव ने कलियुग में उतार कर सतयुग की शुरूआत की और वर्षों पहले घोषणा कर दी थी कि 24 नवम्बर 2019 को सतयुग शुरू जो जाएगा और आज हम उस दिव्य पल में जी रहे हैं। साधकों द्वारा सतयुग के प्रारम्भ के स्वागत में बाड़मेर आश्रम को फूलों से सजाया गया। फिर रात्रि 12 बजे के बाद सामूहिक ध्यान किया गया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ब्राह्मणों की ढाणी पीपाड़ सिटी (जोधपुर) के विद्यार्थियों ने गुरुदेव की तस्वीर और संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान लगाया 26.11.2019

www.the-comforter.org

अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज। (नवम्बर 2019)

नेवीनगर

चुरू

औसियां (23 नवम्बर 2019)

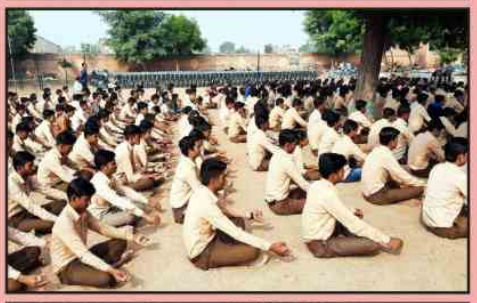

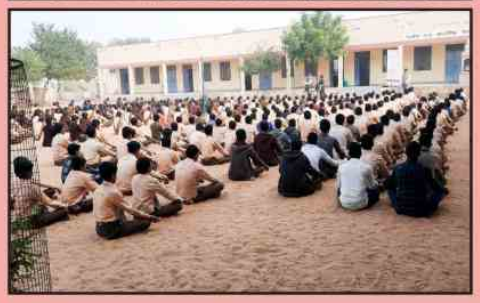

गंगापुर सिटी (25 नवम्बर 2019)

रायपुर (24 नवम्बर 2019)

अवतरण दिवस मुम्बई (24 नवम्बर 2019)

सद्गुरुदेव सियाग के 94 वें अवतरण दिवस पर हैदराबाद के साधकों ने गुरुदेव की पूजा-अर्चना कर 15 मिनट ध्यान लगाया

भारत में रजोगुण का प्रायः सर्वथा अभाव है। इसी प्रकार पाश्चात्य देशों में सत्वगुण का अभाव है। इसलिए निश्चित है कि भारत से बही हुई सत्वधारा के ऊपर पाश्चात्य जगत् का जीवन निर्भर है, और यह भी निश्चित है कि बिना तमोगुण के रजोगुण के प्रवाह से दबाये, हमारा ऐहिक कल्याण नहीं होगा और बहुधा पारलौकिक कल्याण में भी विघ्न उपस्थित होगा।

स्वामी विवेकानन्द

समन्वय किससे

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

कलियुग के गुणधर्म के कारण संसार के सभी धर्मों के शान्ति,प्रेम,सहयोग,अहिंसा, भ्रातृभाव,मानवता आदि के सिद्धान्त ,जितने आज प्रभावहीन हुए हैं, अतीत में कभी नहीं हुए। विश्व के सभी धर्माचार्य शान्ति-शान्ति की रट जितनी तेज करते हैं, अशान्ति उतनी ही तेजी से फैल रही है। अतः अब विश्व के प्रबुद्ध लोगों को धर्मान्धता और धार्मिक कट्टरपन को तिलाजंली देकर शान्त दिल दिमाग से मिल बैठकर सोचना होगा, और इस प्रकार से जो मानवीय धर्म का स्वरुप प्रकट होकर विश्व के सामने आवेगा, मात्र वही विश्व शान्ति का रक्षक होगा।

विश्व भर के तथाकथित समन्वयवादी लोगों ने धर्म और संस्कृति की आड़ में विश्व में हिंसा, घृणा, द्वेष और शोषण ही फैलाया है। यह सत्य नहीं तो आज विश्व भर में धर्मान्धता और धार्मिक कट्टरपन के कारण जितना नरसंहार हो रहा है, उतना पहले कभी क्यों नहीं हुआ? संसार के **सभी धर्मों की मान्यता हैं कि ईश्वर एक है,और सम्पूर्ण विश्व के मानव उसी परमपिता परमेश्वर की संतानें हैं, फिर ईश्वर और धर्म के नाम पर विश्व में नरसंहार क्यों हो रहा है?** आज विश्व की जो विस्फोटक स्थिति है, वह स्पष्ट संकेत दे रही है, कि यदि धर्म और जाति के नाम पर जो नरसंहार हो रहा है,नहीं रुका तो विश्व की कई संस्कृतियाँ खतरे में पड़ जावेगी, और उनका अस्तित्व तक बचना कठिन हो जाएगा। विश्व भर की राजनिति के कर्णधार भरसक प्रयास तेज कर रहे हैं, विश्व में शान्ति स्थापित हो, परन्तु ज्यों-ज्यों वे शान्ति का प्रयास तेज करते हैं, अशान्ति उससे चौगुनी बढ़ जाती है।ऐसी स्थिति के चलते विश्व में शान्ति असम्भव है। घटनाएँ जिस तुफानी गति से मोड़ ले रही है, उसे ध्यान से देखों तो यह संभावना अधिक बलवती होती है कि यह अशान्ति अपनी चरम सीमा को कभी भी लांघ सकती है।

मुझे कई धार्मिक नेता कहते हैं कि मैं पूरब और पश्चिम में समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे उनकी बात सुनकर बहुत ही आश्चर्य होता है। सभी धर्म एक तरफ तो एक ही परम पिता की संतान होने की बात करते हैं, दूसरी तरफ समन्वय की। फिर समन्वय किससे,क्यों और कैसे? हमारा वैदिक दर्शन स्पष्ट कहता है कि **''सर्वं खल्विदं ब्रह्म''**। ऐसे समन्वयवादी लोगों ने समन्वय की आड़ में विघटन ही किया है। अन्यथा संसार आज जिस विस्फोटक अशान्ति के दौर से गुजर रहा है, नहीं गुजरता।

धर्म में हिंसा का स्पष्ट अर्थ है, वह धर्म पतन की तरफ बढ़ रहा हैं।द्वेष, हिंसा, घृणा और भय पर आधारित कोई भी धर्म अपने पतन को रोक नहीं सकता है। ऐसे धर्म का प्रकाश जुगनू जैसा ही होता है। जितनी भी भविष्यवाणियाँ विश्व भर के भविष्यदृष्टाओं ने की हैं, उनको ध्यान से देखने से तो एक ही सर्वमान्य तथ्य प्रकट होता है कि कलियुग के आरम्भ होने के बाद से संसार में जितने भी धर्म प्रकट हुए है, 21 वीं सदी में उनका अस्तित्व ही मिट जावेगा।आज संसार में स्वार्थन्ध लोगों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि सच्चाई नजर ही नहीं आ रही है। भोले-भोले लोगों की भावनाओं को भड़काकर, एक धर्म के लोगों से दूसरे धर्म के लोगों को लड़ाकर, निर्दोष लोगों का शोषण किया जा रहा है। समन्वय की बातें करने वाले चतुर-चालाक लोग, समन्वय की आड़ में धर्म के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हैं। विश्व में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नाम पर जो कुछ भी हो रहा है, अगर उसमें सच्चाई होती तो अब तक उसके परिणाम मिलने आरम्भ हो जाते। सच्चाई तो यह है कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आड़ में एक दूसरे के घर में सेंध लगाने का प्रयास ही किया जा रहा है। अगर यह असत्य है तो सांस्कृतिक आदान-प्रदान विश्व में भाईचारे का मधुर सम्बध स्थापित करने में असफल क्यों हो रहा है? कटु सत्य तो यह है कि इस समय सास्कृतिक आदान-प्रदान मात्र एक कूटनीति है।

मैं तो मानव मात्र में, जो एक ही शाश्वत-अविभाज्य सत्ता कार्य कर रही है, उसी की प्रत्याक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए विश्व में निकला हूँ। आज विश्व में जितने भी धर्म, जिस स्वरुप में चल रहे हैं, मैं उस संकीर्ण दायरे में कैद होने को तैयार नहीं हूँ। मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ मनुष्य शरीर है। मैं मात्र इसी ग्रंथ को पढ़ना सिखाता हूँ, अतः जब तक यह ग्रंथ संसार में रहेगा, तब तक मेरा मिशन चलता ही रहेगा।

मेरे रहने न रहने से इस मिशन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि आज

www.the-comforter.org

भी मैं, हजारों शिष्यों को चेतन कर चुका हूँ। यह शक्ति उनमें जो सबसे उपयुक्त होगा, उसके माध्यम से अपना कार्य सुचारु ढंग से निरन्तर चालु रखेगी। यह एक ऐसी शक्ति सिद्ध नाथयोगियों ने प्रकट कर दी है, जिसे विश्व की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकेगी क्योंकि इसका उपयोग मात्र सृजन में ही हो सकता है विध्वंस में नहीं। इसलिए मैं बिना किसी प्रकार के, झिझक के हर धर्म और हर जाति के लोगों को दीक्षा दे रहा हूँ। एक-एक व्यक्ति को दीक्षा देने से विश्व स्तर पर, इस ज्ञान का प्रसार असंभव है, अतः मैं सामूहिक रूप से दीक्षा देता हूँ। जिस ज्ञान से हित-अहित दोनों हो सकते हैं, उसकी दीक्षा सोच समझ कर देनी पड़ती है। **मैं जितना अधिक इस ज्ञान को बाँटता हूँ, उतनी ही अधिक सामर्थ्य प्राप्त करता हूँ।**

धार्मिक जगत् में दो प्रकार के लोग होते हैं -धर्मार्थी व रहस्यवादी। धर्मार्थी व्यक्ति पहले किसी धर्म संघ (सम्प्रदाय) में धार्मिक शिक्षा ग्रहण करता है, और तब उसका अभ्यास करता है। वह स्वयं के अनुभवों को अपने विश्वास का आधार नहीं बनाता है, परन्तु रहस्यवादी साधक सत्य का अन्वेषण आरम्भ करता है, पहले उसकी प्रत्यक्षानुभूति करता है फिर अपने मत को सूत्रबद्ध करता है। धर्म संघ दूसरों के अनुभवों को अपनाता है, परन्तु रहस्यवादी का अनुभव अपना ही होता है। धर्म संघ बाहर से भीतर की ओर जाने का प्रयास करता है, जबकि रहस्यवादी भीतर से बाहर आता है अपराविद्या तो पढ़ी-लिखी जा सकती है, परन्तु **''पराविद्या''** अनिर्वाच्य विषय है। यह केवल प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय ही है। इस समय विश्व भर में धर्मार्थी लोगों का एक छत्र साम्राज्य है। हमारे देश में समय-समय पर रहस्यवादी संत प्रकट होते ही रहते हैं। श्री नानक देव जी, कबीरदास जी, रैदासजी, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक रहस्यवादी संत हो चुके हैं। मैं भी एक ऐसे ही रहस्यवादी संत का शिष्य हूँ।

मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्रीगंगाई नाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे। मेरे संत सद्गुरु देव की असीम अहैतु की कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

स्वामी मुक्तानंद जी ने ''कुण्डलिनी जीवन का रहस्य'' में गुरुपद प्राप्ति का विवरण देते हुए गीता के 13 वें अध्याय के 13 वें श्लोक का विवरण देते हुए कहा कि इसी परम पुरुष के प्रसन्न होकर आज्ञा देने तथा संत सद्गुरु के प्रसन्न होकर गुरुपद सौंपने पर ही साधक **'गुरु'** बन सकता है, अन्यथा नहीं। स्वामी जी ने जिस रहस्य को प्रकट किया है, वह बात कभी पढ़ने सुनने को नहीं मिली। इस रहस्य का ज्ञान होने के कारण ही मैं स्वामी जी को सच्चा संन्यासी मानता हूँ। मेरे में जो अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, वह मात्र स्वामी जी के उपर्युक्त विवरण के अनुसार ही आया है। मात्र उस नील पुरुष के प्रसन्न होने से मुझे यह सामर्थ्य प्राप्ति नहीं होती। नील पुरुष के प्रसन्न होने और मेरे सद्गुरुदेव के प्रसन्न होकर **गुरुपद** सौंपने से ही यह सामर्थ्य प्राप्त हुई है।

मैं मेरे सद्गुरुदेव के आदेशानुसार सनातन धर्म का संदेश सम्पूर्ण विश्व के सकारात्मक लोगों तक पहुँचाने निकला हूँ। मैं मानव मात्र को योग का प्रसाद बाँटने संसार में निकला हूँ। योगदर्शन और दर्शनों की तरह किसी प्रकार का खण्डन-मण्डन नहीं करता। यह तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है। यह तो मानव मात्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बतलाकर मोक्ष प्रदान करता है।

जिस प्रकार सूर्य उदय होने पर अपने आप प्रकाश सर्वत्र फैल जाता है, उसी प्रकार श्रद्धा होने पर सभी साधनाएँ, हाथ बाँधे सेवा में उपस्थित होती हैं। श्रद्धा साधना रूपी भवन की नींव हैं। श्रद्धा हृदय का पवित्र भाव है, जो अन्य सभी भावों को प्रभावित करता रहता है। श्रद्धा होने पर विवेक रूपी खड्ग स्वतः हाथ में आ जाती है, जो वासना रूपी असुर का संहार करने में समर्थ होती हैं, श्रद्धा एक ऐसा अभेद्य कवच है, जो विषयों के आक्रमणों से साधक की रक्षा करता है। श्रद्धा मानवता का स्वाभाविक लक्षण है। **श्रद्धाविहीन मानव पशु तुल्य है।** ।। 51।।

– स्वामी शिवोमतीर्थ

समाचारों की सुर्खियों में अवतरण दिवस कार्यक्रम और सतयुग का प्रारम्भ-24 नवम्बर 2019

दैनिक नवज्योति
Jodhpur | Monday 25.11.2019

सद्गुरुदेव सियाग के अवतरण दिवस पर श्रद्धालुओं ने किया योग

नवज्योति/जोधपुर।

चौपासनी होटल लेरिया के पास स्थित अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में सद्गुरुदेव रामलाल सियाग का 94 वां अवतरण दिवस श्रद्धा से मनाया गया। संस्था अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार चौधरी ने बताया, कि कार्यक्रम का शुभारंभ सद्गुरुदेव सियाग व बाबा गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा-अर्चना कर हुआ। संस्था अध्यक्ष चौधरी व अन्य साधकों ने गुरुदेव के चरणों का अमृत जल से चरण प्रक्षालन कर पूजा अर्चना की। साथ में गुरु महिमा के भजनों की प्रस्तुति दी। पूजा अर्चना के बाद वर्ष 2020 के कैलेंडर का विमोचन किया गया। 24 नवंबर से सतयुग की घोषणा की गई। गुरुदेव सियाग ने अपने

ध्यान कक्ष में काफी वर्षों पहले 24 नवंबर 2019 को सतयुग की घोषणा की थी जो आज पूरी हो गई। इस अवसर पर महर्षि अरविन्द व श्री मां की वाणी को पढ़कर सुनाया गया। उसके बाद गुरुदेव की दिव्य वाणी में सिद्धयोग दर्शन प्रवचन सुनाया गया। प्रवचन के बाद संजीवनी मंत्र के साथ 15 मिनट का ध्यान करवाया। जिसमें हजारों साधकों ने सिद्धयोग दर्शन का लाभ उठाया। ध्यान के दौरान सैकड़ों साधकों को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएं स्वतः ही शुरू हो गई।

गुरुदेव सियाग का अवतरण दिवस 24 को

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित योग से प्रभावित हो रहे हैं लाखों लोग

नवज्योति/बाड़मेर।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव रामलाल सियाग का 94 वां अवतरण दिवस 24 नवम्बर को सुबह 10.30 बजे से जोधपुर आश्रम में श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा।

देश-विदेश से आए हुए हजारों साधक सामूहिक रूप से संजीवनी मंत्र जप के साथ, 15 मिनट ध्यान कर, आध्यात्मिक अनुभूति और समाधि की गहराई में गोता लगाएंगे। संस्था अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार चौधरी ने बताया कि इस दिन जोधपुर आश्रम में कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरुदेव की पूजा-अर्चना से होगा। उसके बाद गुरुदेव की दिव्य वाणी में उनका प्रवचन सुनाया जाएगा। प्रवचन के बाद संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान कराया जाएगा।

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

से एड्स व कैंसर सहित सभी प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

इसके अलावा दिल्ली, बैंगलोर, चैन्नई, कलकता, गुवाहाटी, भोपाल, लखनऊ, गोवा, पणजी, शिमोगा, शिमला, चण्डीगढ़, पूना, नागपुर, पटना, रायपुर, कटक, हैदराबाद, हल्दवानी, ऊधमसिंह नगर व मुजफ्फरनगर आदि क्षेत्रों से भी सैंकड़ों लोगों के आने की संभावना है।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता
समर्थ सद्गुरुदेवश्री रामलाल जी सियाग
का 94वाँ
अवतरण दिवस
रविवार, 24 नवम्बर, 2019 को सुबह 10:30 बजे से
जोधपुर आश्रम में श्रद्धा पूर्वक मनाया जाएगा।

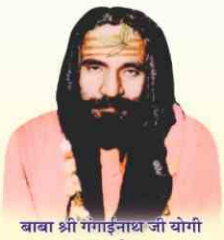

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

सतयुग का प्रारम्भ - 24 नवम्बर 1926 को पृथ्वी पर 'कल्कि' का अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 24 नवम्बर 1968 से अपना कार्य प्रारम्भ करते हुए संपूर्ण मानव जाति में 'एक नई चेतना' का सतत् संचार कर, उसे दिव्य रूप में रूपान्तरित करने के लिए, 'संजीवनी मंत्र' का सघन जप और ध्यान की सरल विधि से अवगत कराया, जिससे मानवीय चेतना में बहुत ही अद्भुत बदलाव आना शुरू हो गया है। सद्गुरुदेव के अनुसार 24 नवम्बर 2019 से सतयुग का प्रारम्भ होगा। समस्त जिज्ञासु साधक गण सादर आमंत्रित हैं।

मुख्यालय : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत - 342001
0291-2753699 +91 9784742595 संजीवनी मंत्र हेतु : 07533006009
Web : www.the-comforter.org YouTube Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY

गुरुदेव सियाग का जयंती 24 नवंबर को

बाड़मेर | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक गुरुदेव रामलाल सियाग का 94वीं जयंती 24 नवम्बर को सुबह 10.30 बजे से जोधपुर आश्रम में श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। संस्था अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार चौधरी ने बताया कि इस दिन जोधपुर आश्रम में कार्यक्रम का प्रारंभ गुरुदेव की पूजा-अर्चना से होगा। उसके बाद उनका प्रवचन सुनाया जाएगा। प्रवचन के बाद संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान कराया जाएगा। इस दिन देश-विदेश से आए हुए साधकों को सिद्धयोग दर्शन से लाभांवित हुए साधकों के अनुभव और संस्था की गतिविधियों से अवगत कराया।

सद्गुरु सियाग का अवतरण दिवस मनाया

जोधपुर@पत्रिका. चौपासनी स्थित अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में स-ुरु रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस रविवार को मनाया गया। संस्था अध्यक्ष राजेन्द्रकुमार चौधरी ने बताया कि कार्यर म की शुरूआत पूजा-अर्चना कर की गई। इसके बाद वर्ष 2020 के कलेंण्डर का विमोचन किया गया। महर्षि अरविन्द और श्रीमां की वाणी सुनाई गई। संजीवनी मंत्र के साथ 15 मिनट ध्यान कराया।

संत रामलाल सियाग के अवतरण दिवस पर साधकों ने किया ध्यान

Jodhpur News - जोधपुर | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र में रविवार को संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस मनाया गया। इस मौके पर...

Bhaskar News Network | Nov 25, 2019, 08:41 AM IST

जोधपुर | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र में रविवार को संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस मनाया गया। इस मौके पर साधकों ने उनके चित्र के समक्ष ध्यान लगाया। संस्थान के अध्यक्ष राजेंद्र कुमार चौधरी ने बताया कि शुरुआत सियाग और बाबा गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा-अर्चना की गई। पूजा अर्चना के बाद वर्ष 2020 के कैलेंडर का विमोचन किया गया। इस दौरान महर्षि अरविंद और श्री मां की वाणी को पढ़कर सुनाया गया। बाद में संत सियाग की दिव्य वाणी और सिद्ध दर्शन पर प्रवचन हुए। इस दौरान 15 मिनट तक ध्यान करवाया गया। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

समाचारों की सुर्खियों में अवतरण दिवस कार्यक्रम और सतयुग का प्रारम्भ-24 नवम्बर 2019

दैनिक भास्कर

25-Nov-201
कोटा जिला P

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र में साधकों ने लगाया ध्यान, अवतरण दिवस मनाया

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र की ओर से सींता स्थित आश्रम में आयोजन

कोटा | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की कोटा माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में रविवार को समर्थ सद्गुरूदेव संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया गया।

समारोह की शुरुआत विश्व में धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुण्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ गरु रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा-अर्चना के साथ हुई। कोटा शाखा अध्यक्ष पदम जैन, साधक राकेश खण्डेलवाल, हरकचन्द शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर पूजा-अर्चना की, आरती भी की। इसके बाद आश्रम सभागार में ध्यान योग कार्यक्रम हुआ।

शाखा के प्रवक्ता राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम में ध्यान के दौरान साधकों ने गुरुदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत्त संजीवनी मंत्र का जाप व गुरुदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पतंजलि के दर्शन में वर्णित स्वतः ही आसन, बंध, प्राणायाम एवं मुद्राएं लगने से यौगिक क्रियाएं होने लगी। 15 मिनट ध्यान के बाद साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया, इसमें सैकड़ों नए साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर में हाड़ौती के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया। बाद में हुए भण्डारे में प्रसादी पाई। संचालन सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजीनियर खुशहाल बावा ने दी। इस दौरान संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

गुरुजी के अवतरण दिवस पर सजाई गई उनकी झांकी।

सींता आश्रम में ध्यान लगाते हुए साधक।

संजीवनी मंत्र दीक्षा दी जायेगी

कोटा 23 नवम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जौधपुर के संस्थापक व संरक्षक प्रवृत्तिमार्गी संत समर्थ सद्गुरूदेव श्री रामलाल सियाग का 94 वां अवतरण दिवस 24 नवम्बर 2019 रविवार को आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जौधपुर शाखा कोटा, माईल स्टोन रेजीडेंसी नहर रोड़, सीन्ता, कोटा में सुबह 10.30 बजे से शाखा कोटा आश्रम मे श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड सहित सम्पूर्ण हाडौती संभाग से आए हुए हजारों साधक सामूहिक रूप से संत सियाग द्वारा प्रदत्त संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान करेगें। इस दिन कोटा आश्रम मे कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरूदेव की पूजा-अर्चना से होगा। उसके पश्चात संजीवनी दीक्षा मंत्र के अजपा जाप के साथ 15 मिनट मेडीटेशन का सत्र होगा जिसमें उपस्थित साधक सामूहिक नाम पके साथ ध्यान करेगें। दिन भर आने वाले नवआगन्तुकों को वर्ष 2009 में रिकार्डेड सीडी के माध्यम से संजीवनी मंत्र, सिद्ध योग की दीक्षा भी दी जायेगी। भक्तों का दावा है कि गुरूदेव सियाग सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से एड्स व कैंसर सहित सभी प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। इस अवसर पर भण्डारे का आयोजन भी रखा गया है। इसी प्रकार देश-विदेश एवं जोधपुर मुख्यालय स्थित आश्रम मे भी अवतरण दिवस धूमधाम के साथ मनाया जायेगा, वहाँ पर पूजा-अर्चना संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग करेगें।

संत रामलाल सियाग का अवतरण दिवस संपन्न

संत रामलाल सियाग के अवतरण दिवस में उपस्थित श्रद्धालुगण।

कोटा, (योगेश जोशी): अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान में समर्थ सद्गुरूदेव संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस कोटा शाखा के माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व में धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुन्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरू रामलालजी सियाग तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचन्द शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर हजारों साधकों की उपस्थिति मे पूजा-अर्चना एवं आरती की।

इसके पश्चात ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरूदेव द्वारा दीक्षा मे प्रदत्त संजीवनी मंत्र का जाप एवं गुरूदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों मे वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातन्जली के दर्शन में वर्णित स्वतः ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्रायें लगने से यौगिक क्रियायें होने लगी। इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में लगाया ध्यान

कोटा | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की कोटा माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में रविवार को समर्थ सद्गुरूदेव संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह की शुरुआत विश्व में धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुण्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ गुरू रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा-अर्चना के साथ हुई। कोटा शाखा अध्यक्ष पदम जैन, साधक राकेश खण्डेलवाल, हरकचन्द शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर पूजा-अर्चना की, आरती भी की। इसके बाद आश्रम सभागार में ध्यान योग कार्यक्रम हुआ। शाखा के प्रवक्ता राजेश गौतम ने बताया कि हाड़ौती के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया। बाद में हुए भण्डारे में प्रसादी पाई। संचालन इंजीनियर खुशहाल बावा ने दी। 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

दैनिक भास्कर

सद्गुरू संत रामलाल सियाग का अवतरण दिवस मनाया

संदेश न्यूज। कोटा.

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान में रविवार को सद्गुरुदेव संत रामलाल सियाग का 94वां अवतरण दिवस कोटा शाखा के सीन्ता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ।

कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचंद्र शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर साधकों की उपस्थिति में पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। इसके बाद आश्रम के साधकों से खचाखच भरे हॉल में ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरूदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत संजीवनी मंत्र का जाप कर गुरुदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातन्जली के दर्शन में वर्णित स्वतः ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्राएं लगने से यौगिक क्रियाएं होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के बाद साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया तथा इसमें सेकड़ों की संख्या में नए साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर में लगभग हाड़ौती अंचल के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस अवसर पर आयोजित भण्डारे में भोजन प्रसादी ग्रहण करते हुए आश्रम की दीक्षा सहित समस्त गतिविधियों मे भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजीनियर खुशहाल बावा ने दी, इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया, जो कि अब वितरण के लिए शाखा कोटा पर उपलब्ध रहेगा।

2744-2324477 RNI No. 28286/74 *कार्यकारी संपादक: संजय शर्मा M. 8852000757 *पीआरबी एक्ट के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी (सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र कोटा)

समर्थ सद्गुरुदेव संत श्री रामलाल जी सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस मनाया

कोटा। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान मे दिनांक 24.11.2019 रविवार को समर्थ सद्गुरुदेव संत श्री रामलाल जी सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस कोटा शाखा के माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व मे धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुन्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरू श्री रामलालजी सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचन्द शर्मा ने सन्त श्री रामलालजी सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर हजारों साधकों की उपस्थिति मे पूजा-अर्चना एवं आरती की। इसके पश्चात आश्रम के साधकों से खचाखच भरे हॉल मे ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरूदेव द्वारा दीक्षा मे प्रदत संजीवनी मंत्र का जाप एवं गुरूदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों मे वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातन्जली के दर्शन मे वर्णित स्वतः ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्रायें लगने से यौगिक क्रियायें होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के पश्चात साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया, तथा इसमे सेकडों की संख्या मे नये साधकों ने दीक्षा भी ली।

दिनभर मे लगभग हाडौती संभाग के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरूदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस अवसर पर आयोजित भण्डारे मे भोजन प्रसादी ग्रहण करते हुए आश्रम की दीक्षा सहित समस्त गतिविधियों मे भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजीनियर खुशहाल बावा ने दी, इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया जो कि अब वितरण के लिये शाखा कोटा पर उपलब्ध रहेगा।

समाचारों की सुर्खियों में अवतरण दिवस कार्यक्रम और सतयुग का प्रारम्भ-24 नवम्बर 2019

अवतरण दिवस पर साधकों ने लगाया ध्यान

नवज्योति/कोटा

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर के संस्थापक रामलाल सियाग का 94 वां अवतरण दिवस सीन्ता नहर रोड माईल स्टोन रेजीडेंसी स्थित कोटा आश्रम में रविवार को मनाया गया। कार्यक्रम में हाडौती संभाग से साधकों ने सामूहिक रूप से संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान लगाया। इस मौके पर कई साधकों को दीक्षा दी गई।

कोटा आश्रम में कार्यक्रम के बाद भण्डारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन व सिद्धयोग दर्शन की जानकारी खुशहाल बावा ने दी। कार्यक्रम में संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

अवतरण दिवस मनाया : सींता स्थित आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र पर रविवार को संत रामलाल सियाग का अवतरण दिवस मनाया। इस मौके पर सत्संग, भजन व ध्यान योग के कार्यक्रम हुए। आश्रम की ओर से राजेश गौतम ने बताया कि लोगों ने ध्यान लगाया। प्रारंभ में चरण पादुका पूजन किया। शहर व ग्रामीण इलाकों से बड़ी संख्या में लोग आए।

राजस्थान पत्रिका

समर्थ सद्गुरुदेव संत श्री रामलाल सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस मनाया

गुरुदेव रामलाल सिहाग का मनाया अवतरण दिवस

सैकड़ो साधकों ने ली दीक्षा

कोटा, 24 नवंबर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान मे आज रविवार को समर्थ सतगुरु देव संत रामलाल सियाग का 94 वा अवतरण दिवस कोटा शाखा के सीन्ता स्थित आश्रम मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व मे धार्मिक क्रांति के प्रणेता एवं सिद्धियोग के जनक, कुन्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरु रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ।

कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खंडेलवाल और हरकचंद शर्मा ने संत श्री रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर हजारों साधकों की उपस्थिति मे पूजा अर्चना एवं आरती किया गया। 15 मिनट के ध्यान के पश्चात आश्रम के अंदर असीम शांति का अनुभव किया। इसके पश्चात आश्रम के सभागार में साधकों से खचाखच भरे हॉल में ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरुदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत्त संजीवनी मंत्र का जाप एवं गुरुदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातंजली के दर्शन में वर्णित स्वत: ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्रायें लगने से यौगिक क्रियायें होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के पश्चात साधकों ने अपने अन्दर असीम शांति का अनुभव किया तथा इसमें सेकड़ों की संख्या में नये साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर मे लगभग हाडौती संभाग के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस

शेष अन्तिम पेज पर...

हर्षोल्लास से मनाएंगे गुरुदेव सियाग का अवतरण दिवस आज

कोटा 23 नवम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जौधपुर के संस्थापक व संरक्षक प्रवृत्तिमार्गी संत समर्थ सद्गुरूदेव श्री रामलाल सियाग का 94 वां अवतरण दिवस 24 नवम्बर रविवार को आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा, माईल स्टोन रेजीडेंसी नहर रोड़, सीन्ता, कोटा में सुबह 10.30 बजे से शाखा कोटा आश्रम मे श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर शाखा कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ सहित सम्पूर्ण हाडौती संभाग से आए हुए हजारों साधक सामूहिक रूप से संत सद्गुरू सियाग द्वारा प्रदत्त संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान करेगें। इस दिन कोटा आश्रम मे कार्यक्रम का प्रारम्भ गुरूदेव की पूजा-अर्चना से होगा। उसके पश्चात संजीवनी दीक्षा मंत्र के अजपा जाप के साथ 15 मिनट मेडीटेशन का सत्र होगा जिसमें उपस्थित साधक सामूहिक नाम ज पके साथ ध्यान करेंगे। दिन भर आने वाले नवआगन्तुकों को वर्ष 2009

में रिकार्डेड सीडी के माध्यम से संजीवनी मंत्र, सिद्ध योग की दीक्षा भी दी जायेगी। गु रू दे व सियाग सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से एड्स व कैंसर सहित सभी प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। इस अवसर पर भण्डारे का आयोजन भी रखा गया है।

इसी प्रकार देश-विदेश एवं जोधपुर मुख्यालय स्थित आश्रम मे भी अवतरण दिवस धूमधाम के साथ मनाया जायेगा, वहाँ पर पूजा-अर्चना संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग करेगें।

हर्षोल्लास से मनाया गुरु सियाग का अवतरण दिवस

कोटा 24 नवम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान में आज रविवार को समर्थ सद्गुरूदेव संत रामलाल सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस कोटा शाखा के माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौत्तम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व मे धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुन्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरू रामलालजी सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचन्द्र शर्मा ने सन्त रामलालजी सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर हजारों साधकों की उपस्थिति मे पूजा-अर्चना एवं आरती की। इसके पश्चात आश्रम के सभागार में साधकों से खचाखच भरे हॉल मे ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरूदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत्त संजीवनी मंत्र का जाप एवं गुरूदेव की फेटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातन्जली के दर्शन में वर्णित स्वत: ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्रायें लगने से यौगिक क्रियायें होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के पष्चात साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया तथा इसमें सेकडों की संख्या में नये साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर मे लगभग हाडौती संभाग के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरूदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस अवसर पर आयोजित भण्डारे मे भोजन प्रसादी ग्रहण करते हुए आश्रम की दीक्षा सहित समस्त गतिविधियों मे भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजिनियर खुषहाल बावा ने दी, इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया जो कि अब वितरण के लिये शाखा कोटा पर उपलब्ध रहेगा।

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में

योग साधना का साधारण नियम यह है कि तुम अवसाद आने पर अपने-आपको अवसन्न मत होने दो, उससे अपने को अलग कर लो, उसके कारण को देखो और उस कारण को दूर करो; क्योंकि वह कारण सर्वदा ही अपने अंदर होता है; संभवतः कहीं कोई प्राण में दोष होता है, या तो किसी अशुद्ध प्रवृत्ति को प्रश्रय दिया गया होता है अथवा कोई तुच्छ वासना कभी तृप्त होने के कारण, कभी अतृप्त रह जाने के कारण प्रतिक्रिया उत्पन्न किये होती है। योगसाधना में बहुत बार एक वासना को तृप्त कर देने पर, किसी अशुद्ध प्रवृत्ति को स्वच्छंद खेलने देने पर वह किसी अतृप्त वासना की अपेक्षा अधिक बुरी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

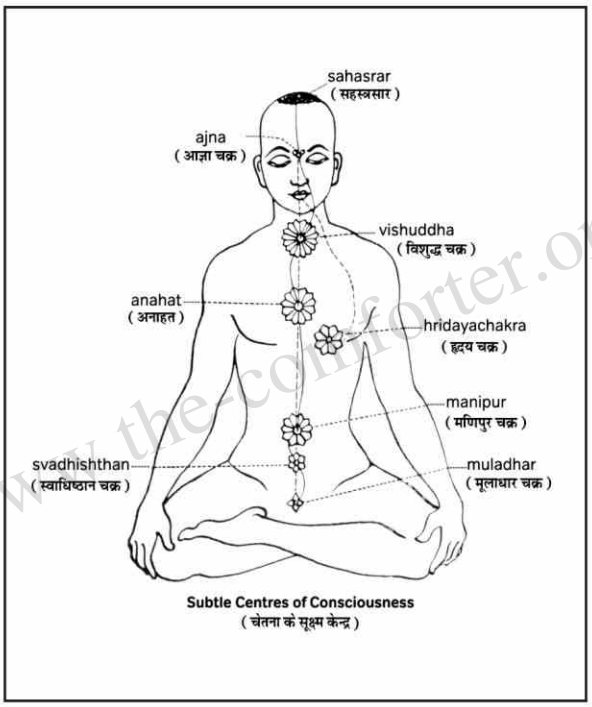

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

तुम्हें इस बात की आवश्यकता है कि तुम अधिकाधिक अपने अंतर की गंभीरता में निवास करो, अपने बाह्य प्राण और मन में, जो इन बाह्य स्पर्शों के लिये खुले हुए हैं, कम निवास करो। अंतरतम् हृत्पुरुष इन सबके द्वारा पीड़ित नहीं होता; भगवान् के साथ जो उसका अपना सहज सामीप्य है उसमें वह प्रतिष्ठित रहता है और ऊपरी सतह की इन तुच्छ वृत्तियों को एकदम बाहरी चीजें और अपनी वास्तविक सत्ता के लिये विजातीय समझता है, जिन कठिनाइयों और कुप्रवृत्तियों का तुम पर आक्रमण होता है, उनके साथ बर्ताव करने में संभवतः तुम यह भूल करते हो कि तुम उनके साथ बहुत अधिक तादात्म्य स्थापित कर लेते हो और उन्हें अपनी प्रकृति का अंग समझने लगते हो। तुम्हें तो बल्कि उनसे अलग हो जाना चाहिये, अपने-आपको उनसे निर्लिप्त और वियुक्तकर लेना चाहिये, यह समझना चाहिये कि वे अपूर्ण और अशुद्ध विश्वव्यापी निम्न प्रकृति की क्रियाएँ हैं, वे ऐसी शक्तियाँ हैं जो तुम्हारे अंदर प्रवेश करती और अपनी अभिव्यक्ति के लिये तुम्हें अपना यंत्र बनाने की चेष्टा करती हैं।

इस प्रकार अपने आपको इनसे निर्लिप्त और वियुक्त कर लेने पर तुम्हारे लिये यह अधिक संभव हो जायेगा कि तुम अपने एक ऐसे भाग का-अपनी आंतर या अपनी चैत्य सत्ता का-पता पा लो और उसी में अधिकाधिक निवास करने लगो, जो इन सब बाह्य वृत्तियों से आक्रांत या पीड़ित नहीं होता, इन सबको अपने से विजातीय समझता है और स्वभावतः ही इन्हें अनुमति देने से इंकार करता है और अपने-आपको निरंतर भागवत शक्तियों तथा चेतना के उच्चतर स्तरों की ओर मुड़ा हुआ या उनसे संबंधित अनुभव करता है। अपनी सत्ता के उस भाग को ढूंढ़ निकालो और उसी में निवास करो; ऐसा करने में समर्थ होना ही योगासाधना की सच्ची नींव है।

❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

इस प्रकार निटेला पौधा मन और स्थूल जगत् के सीमा क्षेत्र के गम रहस्यों की गूढलिपि का अर्थ जानने में एक प्रकार से रोसेटा पत्थर की भूमिका अदा कर सकता है।

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के इस आदर्शवादी वैज्ञानिक के मित्र थे। उन्हें सम्बोधित कर कविवर ने निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी थी:

हे तपस्वि डाको तूमि साममंत्रे जलदगर्जने, ''उत्तिष्ठत ! निबोधत !'' डाको शास्त्र अभिमानीजने - पाण्डित्येर पण्डतर्क हते। सुबृहत विश्वतले डाको मूढ़ दाम्भि केरे। डाक दाओ तब शिष्य दले - एकत्रे दाँडाक तारा तब होम-हुताग्नि घिरिया। बार-बार ए भारत आपनाते आसूक फिरिया निष्ठाय, श्रद्धाय, ध्याने-बसूक से अप्रमत्तचित्ते लोभहीन, द्वन्द्वहीन, शुद्ध, शान्त गुरुर वेदिते।

''हे तपस्वि ! साममन्त्रों की जलद गम्भीर गर्जना से पुकारो... ''उठो ! जागो !'' शास्त्राभिमानी जनों और कुतर्कों से आहत बुद्धि पण्डितों को पुकारो और उन्हें बेकार तर्कों का त्याग करने को कहो। उन मूढ दम्भियों को इस सुविस्तृत संसार में आने की प्रेरणा दो। अपने शिष्यों का भी आह्वान करो कि वे कर्त्तव्यरूपी यज्ञवेदी के चारों ओर एकत्रित हों, जिससे हमारा भारत, हमारा प्राचीन देश अपने सच्चे स्वरूप को पुनः प्राप्त करे और कर्त्तव्यनिष्ठा, श्रद्धा और ध्यान में अप्रमत्तचित्त होकर लोभहीन, द्वन्द्वहीन. शुद्ध और शान्त बनकर विश्वगुरु के आसन पर एक बार फिर अधिष्ठित हो।''

नेपोलियन की सेना के अफसर रोसेटा को मिस्र में एक प्रस्तर-खण्ड मिला था जिस पर तीन लिपियों में लेख उत्कीर्ण थे। उसकी सहायता से प्राचीन मिस्र की लिपियाँ पढ़ ली गयीं। टैगोर की इस कविता में उल्लिखित सामवेद, चार वेदों में से एक वेद है। अन्य तीन हैं ऋग्वेद, यजर्वेद और अथर्ववेद। ये पवित्र ग्रन्थ ब्रह्म या स्रष्टा के स्वरूप का वर्णन करते हैं जो मनुष्य में आत्मा के रूप में स्थित होता है। ब्रह्म शब्द **'बृह'** धातु से बना है, जिसका अर्थ है ''विस्तार होना।'' इस में स्वतः ही विस्तृत होने वाली ईश्वरीय शक्ति की वैदिक संकल्पना स्पष्ट हाती है। ब्रह्माण्ड का विस्तार मकड़ी-जाल की तरह उसी ब्रह्म से होता है। आत्मा की ब्रह्म के साथ **सायुज्य** को ही वेदों का सार कहा जा सकता है।

वेदों के सार, वेदान्त ने कई महान् पाश्चात्य विचारकों को प्रेरणा दी है। फ्रांसीसी इतिहासकार विक्तेर कूजैं ने कहा था: ''जब हम पूर्व की - और सर्वोपरि मान दार्शनिक गरिमा का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करते हैं, तब हमें उनमें ऐसे-ऐसे गहन सत्यों का दर्शन होता है ... कि हम पूर्व के दर्शन के आगे अपने आप नतमस्तक हो जाते है और हमें यह मानना ही पड़ता है कि मानवजाति की यह आद्य लीलास्थली ही सर्वोच्च दर्शन की जन्मभूमि है।'' श्लेगेल ने कहा था: ''यूरोपियनों का भव्यतम दर्शन, जो यूनानी दार्शनिकों द्वारा प्रस्तुत किया गया विश्लेषणात्मक आदर्शवाद है, वह भी पूर्वीय आदर्शवाद की प्राणप्रचुरता और स्फूर्ति की तुलना में ऐसा प्रतीत होता है मानो मध्याह्न के सूर्य के प्रचण्ड आलोक के समक्ष एक क्षीण स्फुर्ल्लिंग मात्र हो।''

भारत के विराट् साहित्य भण्डार में वेद (**विद् धातु** से, जिसका अर्थ है जानना) ही ऐसे ग्रन्थ हैं जिनके रचयिता का कहीं कोई उल्लेख नहीं। **ऋग्वेद** (10:90, 9) में उन मंत्रों की उत्पत्ति अपौरूषेय बतायी गयी है। ऋग्वेद (3:39, 2) में कहा गया है कि वे अति-प्राचीन काल से प्रचलित चले आ रहे हैं और नयी भाषा में पुनर्गठित किये गये हैं। युग-युगान्तर में ऋषियों को सीधे ईश्वर से मिले वेदों को नित्यत्व युक्त या कालबाधातीत कहा जाता है।

वेद, ध्वनि के माध्यम से ऋषियों को मिले, ऋषियों ने उन्हें प्रत्यक्ष सुना, इसलिये उन्हें श्रुति कहा जाता है। मूलतः ये 'स्तव' और 'पाठ' करने का संग्रह है। इसीलिये सहस्रावधि वर्षों तक वेदों की एक लाख ऋचाओं को कभी लिखा नहीं गया; वे ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा वाणी से ही हस्तान्तरित किये जाते थे। पत्थर और कागज, दोनों ही काल के द्वारा मिटाये जा सकते हैं। वेद जो लुप्त न होकर युग-युगान्तर से मूल स्वरूप में चले आ रहे हैं, उसका कारण यही है कि ऋषिगण जानते थे कि वेद-ज्ञान के हस्तांतरण के लिये जड़ पदार्थों की अपेक्षा मन ही श्रेष्ठ साधन है। ''हृत्पटल'' से अधिक श्रेष्ठ क्या हो सकता है ?

जिस क्रम में वैदिक शब्द आते हैं (अनुपूर्वी), उसी क्रम में उन्हें बनाये रखने की विशिष्ट पद्धति का, शब्द-संधि के नियमों का तथा अक्षर-सम्बन्धों के नियमों का अनुसरण कर और कण्ठस्थ किये हुए वेदमंत्रों की विशुद्धता को विशिष्ट गणितीय रीतियों से प्रमाणित कर ब्राह्मण अद्वितीय ढंग से वेदों के मूल रूप की रक्षा करते आये हैं। प्रत्येक वेद शब्द के प्रत्येक अक्षर का विशिष्ट महत्त्व और सामर्थ्य है।

❖❖❖

गतांक से आगे...

योग के बारे में

बुद्धि के होते हुए मनुष्य इन्हीं प्रभावों और मटरगश्तियों का दोषी है। लेकिन इस आधार पर न मनुष्य और न प्रकृति प्रयोजनहीन या बुद्धिहीन है। प्रकृति स्वयं मनुष्य को बाधित करती है कि वह कठोर उपयोगितावादी न बने क्योंकि वह अर्थशास्त्री और उपयोगितावादी दार्शनिक से ज्यादा अच्छी तरह जानती है। वह वैश्व बुद्धि है और उसे केवल कुल योग की नहीं बल्कि प्रत्येक व्यौरे की, वैश्व के साथ ही-साथ, विशिष्ट परिणाम की देखरेख करनी होती है। उसे समूह पर नजर रखते हुए ब्योरे को संपादित करना होता है, केवल समूह पर नहीं बल्कि समस्त वर्ग पर, केवल समस्त वर्ग पर नहीं बल्कि जातियों के एक पूरे जहान पर ब्योरे को संपादित करना होता है। मनुष्य की अपनी विशेष बुद्धि तर्कबुद्धि के कारण सीमित है और वह इस विस्तार के अयोग्य है।

मनुष्य अपने लक्ष्य विशेष को सामने रखता है और यह नहीं देखता कि उनमें तल्लीनता उसके साधारण कल्याण में कहाँ चोट करती है और न यह पता चल सकता है कि वे लक्ष्य कहाँ पर वैश्व प्रयोजन के साथ टकराते हैं। प्रकृति की असफलताओं का भी उपयोग होता है - हम जल्दी ही जानेंगे कि कितना बड़ा उपयोग होता है। उसकी सनकों में छिपी गंभीरता होती है। और इन सबसे बढ़कर उसे याद रहता है कि सभी औपचारिक लक्ष्यों के परे उसका सबसे बड़ा उद्देश्य है, वैश्व आनन्द को व्यवस्था के साधनों का आधार बनाकर विकसित करना और अपने साधनों का अतिक्रमण करना। वह इसकी ओर गति करती है, वह मार्ग में आनन्द लेती है, वह कार्य में आनन्द लेती है और वह कार्य के परे भी आनन्द लेती है।

लेकिन इस सबमें हम पहले से मान लेते हैं, हम ऐसे बोलते हैं मानों प्रकृति आत्म-सचेतन है। हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि प्रकृति मनुष्य से ज्यादा विस्तार में और उससे ज्यादा पूर्ण रूप से प्रयोजनमूलक है। स्वयं मनुष्य प्रकृति के कारण ही प्रयोजनमूलक है, उसके अंदर भी वही प्रारंभिक साधन और प्रक्रियाएँ हैं जो पशु और वनस्पति में होते हैं, उनमें बस मन का एक नया विशेष साधन जुड़ गया है। कहा जा सकता है कि इससे बुद्धि नहीं बन जाती क्योंकि बुद्धि केवल प्रयोजनमूलक ही नहीं बल्कि विवेकशील और मानसिक रूप से सचेतन होती है।

प्रकृत में यांत्रिक विवेक बहुत अधिक मात्रा में अवश्य है, उसके बिना उसकी प्रयोजनमूलक प्रक्रियाएँ असंभव होंगी। हवा में सीधी बढ़ती हुई छोटी-सी टहनी किसी रस्सी, लकड़ी या किसी पौधे के डंठल के संपर्क में आती है। वह उसे तुरन्त ऐसे पकड़ लेती है मानों उंगली से पकड़ रही हो, वह सीधा बढ़ना छोड़कर गोलाई में आ जाती है और दबाव डालती हुई, सहारे के चारों ओर गोल-गोल लिपट जाती है। इस परिवर्तन के लिये उसे कौन प्रवृत्त करता है? उससे सहारे की उपस्थिति और नयी गति के बारे में विवेक कौन करवाता है? यह नन्हीं टहनी की सहज वृत्ति है और वह किसी तरह नवजात पिल्ले की सहजवृत्ति से भिन्न नहीं है जिससे वह माँ के थन पकड़ लेता है, या जो मनुष्य की अधिक यांत्रिक आवश्यकताओं और क्रियाओं में काम करती है। हम कुमुद को चन्द्रमा के आगे पंखड़ियाँ खोलते और दिन का स्पर्श पाते ही उन्हें बंद कर लेते हुए देखते हैं।

इस विवेकशील गति में ज्वाला के स्पर्श से हाथ के पीछे उछलने या किसी वीभत्स दृश्य से स्नायुओं में होनेवाली जुगुप्सा और अप्रसन्नता के साथ पीछे हटने की क्रिया अथवा अरुचिकर विचार या मन के निषेध या अप्रिय भाव के साथ पीछे हटने की क्रिया में क्या फर्क है?

तात्त्विक रूप से इनमें कोई फर्क नहीं है लेकिन फर्क है परिस्थितियों में। एक में मानसिक आत्म-चेतना नहीं है, दूसरी में यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व मौजूद है। हम मिथ्या रूप से यह सोचते हैं कि टहनी की क्रिया में या कमल में कोई इच्छा शक्ति या विवेक नहीं है। उनमें इच्छा है पर मानसिक भावापन्न इच्छा नहीं, विवेक है पर मानसिक-भावापन्न विवेक नहीं। हम कह देते हैं, यह यांत्रिक है परन्तु क्या हम समझते हैं कि जब हम यह कहते हैं तो इसका क्या अर्थ होता है? और हम दूसरे नाम दे लेते हैं, इच्छा शक्तिऔर विवके को स्वाभाविक या प्राकृतिक प्रतिक्रिया या ऐन्द्रिय प्रवृत्ति कहते हैं। ये नाम एक तात्त्विक अभिन्नता को छिपाने के लिये अलग-अलग मुखौटे हैं।

www.the-comforter.org

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

A part from this the other support is of the unseen supreme divine power which has already shown me the scenes of my life till the last breath in pieces, like trailer of a film and today also that supreme power is guiding me at every step. I have been shown with proof that whatever is to be done is apredeter mined arrangement and not even an iota of change is possible in it. By putting me in extremely difficult circumstances I was forced to perform spiritual practices, leading to the accumulation of the amount of spiritual power, that I was incapable of calculating, when all of a sudden Gurudev handed over his vast spiritual power in inheritance, the amount of which is impossible for me to figure out.

I can clearly feel that I am merely a puppet who is dancing by the will of the divine power. I have been told very clearly that I have reached the other end of this ' bhavsagar'(Sea of life). The benevolent, all powerful divine force has firmly held my right hand in his right hand by bending forward. In this situation, with little effort, I will easily be able to cross the 'bhavsagar'(sea of life).I have been clearly explained that for this, my effort is utmost important otherwise it is impossible to complete the work. With the support of some of these guidelines and orders, I have set out alone.

I have been clearly told, crossing which all valleys, canyons, extremely dangerous forests and deserts how I will reach the top of the highest summit. People of the world have very little knowledge about that Supreme power right now but lately, there has been an unprecedented increase in the efforts. This is proven by the fact that the Divine power has descended on the earth and as per a well conceived plan it is spreading its light in the world with a great speed. As when the time of sunrise approaches, the light of the stars gets dimmer. The stars do not like this loss of power but despite opposition from all the stars, the time of sunrise doesn't change. The moment sun rises, the power of all the stars disappears despite their being at the same positions as before. The condition of the world is like this today.

This situation is not acceptable to the people of different faith and religious masters of different religions but just like stars they will have no power to control it. All will be left watching helplessly.

Mahrishi Aurobindo had seen this clearly. So, he had announced the descent of that power. I can feel it clearly that when I talk about direct experience and self realisation, people of the world look at me with disbelief and a questioning look. They do not believe this at all.

❖❖❖

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

4 THU

MARCH	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
	31					1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30

APRIL	Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5	6
	7	8	9	10	11	12	13
	14	15	16	17	18	19	20
	21	22	23	24	25	26	27
	28	29	30				

1996

APRIL

→ मानव का दिव्य-रूप में रूपान्तरण ←

Appointments

8 "उच्चतर तत्व का अवतरण संभव है, और यह अवतरण हमारे —,
9 अध्यात्मिक आत्मस्वरूप को केवल जगत से बाहर ले जाकर ही मुक्त नहीं करेगा, बल्कि इस जगत के "अन्दर" भी मुक्त करेगा, मन के अज्ञान या इसके अत्यन्त सीमित ज्ञान के स्थान पर
10 अतिमानसिक चेतना को स्थापित करेगा, जो आन्तरिक-आत्मा का ठीक यन्त्र होगी, और इसी की सहायता से मनुष्य अन्तर्मुखी और क्रियाशील दोनों
11 भावों में अपने आपको प्राप्त करेगा, और अपनी पशुता से भरी मनुष्यता से निकलकर एक दिव्य-जाति में परिणित होगा।

"श्री अरविन्द"

12

"मनुष्य जब अतिमानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर
1 PM द्वारा उसका मन, प्राण और शरीर दिव्य-स्वरूप में रूपान्तरित हो जायगा। इसी का नाम है
2 पार्थिव-अमरत्व (Terrestrial immortality) जीते जी जीवनमुक्त होना।"

"श्री अरविन्द"

3

इस सम्बन्ध में संत कबीरदासजी ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है:—

4

साधो भाई जीवत ही करो आशा।
5 जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फाँस न काटि, मुए मुक्ति की आसा।।
6 तन छूटे जिव मिलन कहत हैं, सो सब झूठी आसा।
अबहुँ मिला सो तबहुँ मिलैगा, नहिं तो जमपुर बासा।।
7

"कबीर"

NOTES

"यदि यह सत्य है कि सब कुछ उस "एक" ही परमसत्ता का विभिन्न रूप में प्रकाश है, एकही चेतना का उत्तरोत्तर विकास है, तो मन का अतिमानस से, प्राण का चित्त से, शरीर का सत से और आत्मा का आनन्द से पुनर्मिलन असम्भव नहीं माना जा सकता, और तब मानव मंदिर में सच्चिदानन्द की प्राण-प्रतिष्ठा कोई असम्भव और अलौकिक बात नहीं रह जाती।"

"श्री अरविन्द"

અદ્‌ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીટ્ટૈહપ્ત નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઈએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઈ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૉકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૉકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો સંતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના સંતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો સંતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઈ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઈ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૉકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૉકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્‌ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઈ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

शंका-समाधान

ध्यान 15 मिनट ही करें !

साधक :- गुरुदेव, 15 मिनट से ज्यादा ध्यौन कर सकते हं ?

गुरुदेव :- केवल 15 मिनट ही ध्यान करो और मंत्र हर समय जपो (राऊण्ड द क्लॉक)। ध्यान आपको 15 मिनट ही करना है। कुछ लोग देर तक बैठे रहते हैं, बाद में मुश्किल हो जाएगी।

(5 अप्रेल 2012 को जोधपुर आश्रम में साधकों की शंकाओं का सद्गुरुदेव ने समाधान किया।)

''यदि ध्यान लग जाए तो एक पल में करोड़ों पाप कटते हैं, मगर ध्यान ही नहीं लगता है।''

15 मिनट ध्यान कितना ज्यादा है ?
इस पर बात करते हुए सद्गुरुदेव ने कहा था !

उत्तरप्रदेश से एक साधक-मैं पिछले तीन दिन से ध्यान कर रहा हूँ। मेरे टॉयलेट के रास्ते से खून आने लग गया है। क्या इस योग से कोई नुकशान भी होता है ?

जब उनको पूछा गया कि आप कितनी देर तक ध्यान करते हो ? तो उन्होंने बताया कि मैं डेढ़-दो घण्टे ध्यान करता हूँ।

-एक साधक आया और गुरुदेव से पूछा कि गुरुदेव मेरे शरीर में गर्मी बहुत बढ गयी है। गुरुदेव ने उनसे पूछा कि कितनी देर तक ध्यान करते हो ? तो उन्होंने कहा कि मैं 2-2.30 घण्टे ध्यान करता हूँ तो गुरुदेव ने हँसकर कहा कि आया है बड़ा योगी जो दो-ढाई घण्टे ध्यान करता है। ध्यान बंद कर दे गर्मी मिट जाएगी। **15 मिनट से ज्यादा क्यों किया ?**

गुरुदेव स्पीच में उदाहरण देते थे कि हमारे ऋषि-मुनि, योगिजन हिमालय की कंदराओं में जाकर नंगे बदन बर्फ पर बैठकर, ध्यान क्यों करते थे ? इसलिए नहीं कि भगवान् वहाँ घुसा बैठा था जो कि वहाँ जाते ही मिल जाएगा।

इसलिए कि योग से शरीर में उत्पन्न गर्मी को शरीर झेल सके। पहले हठयोग ही आराधना का साधन था।

अब जब गुरुदेव ने इतना सहज और सरल मार्ग बता दिया है तो फिर हम अपनी बुद्धि क्यों लगाए ?

www.the-comforter.org

का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था''।

हर युग के अंत में जब धर्म का रूप विकृत हो जाता है और संसार अंधकार से ढक जाता है तो वह परमसत्ता स्वयं प्रकट होकर संसार से तामसिक वृत्तियों का नाश करके अपनी सात्त्विक सत्ता स्थापित करके पुनः अपने लोक में प्रविष्ट हो जाती हैं। यह क्रम संसार में निरन्तर चलता रहेगा।

श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है कि **''श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्‌बुद्ध करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।''** इस युग के सभी धर्मों के धर्माचार्यों ने भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों को अलग-अलग बाँट रखा है। एक कृत्रिम लक्ष्मण रेखा द्वारा दो भागों में बाँट दिया। एक क्षेत्र का दूसरे में हस्तक्षेप पूर्णरूप से वर्जित कर रखा है। भौतिक विज्ञान के जनक, अध्यात्म विज्ञान पर ऐसे वर्ग ने अपना अधिकार स्थापित कर रखा है जो कि इसका कुछ भी ज्ञान नहीं रखता। इस अनधिकृत अतिक्रमण ने ही संसार को गहन अँधकार में डाल रखा है। इस युग में भौतिक रूप से पूर्ण विकसित देशों में भी ऐसे तथाकथित धर्म गुरुओं का साम्राज्य है।

धन के बदले में हर पाप से मुक्ति प्राप्त करने के प्रमाण पत्र तक दिये जा रहे हैं। इस प्रकार संसार भर के साधु पुरुष भयंकर कष्ट में फँस चुके हैं। ऐसा लगता है, भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस समय अपने प्रकट होने का :-**'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।'** कह कर बताया है, वह बहुत निकट है। संसार में जो नर संहार और भयंकर रूप से तामसिक वृत्तियों का एक छत्र शासन हो चला है, स्पष्ट करता है- कि वह परमसत्ता प्रकट होने ही वाली है। इस सम्बन्ध में संसार के अनेक संत भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं।

यीशु मसीह ने भी इस सदी के अन्त तक उस सत्य की आत्मा के प्रकट होने की बात कही है। यीशु ने कहा था ''मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा''।

सत्य की अनुभूति के लिए समर्थ सद्‌गुरुदेव द्वारा दिया संजीवनी मंत्र का सघन जप और नियमित ध्यान ही मुख्य साधन है।

-सम्पादक

कर्तव्य के प्रति निष्ठावान

बड़ौदा (गुजरात) के महाराजा सयाजी राव गायकवाड़; श्री अरविन्द के साथ एक सेवक की तरह नहीं, सुहृद मित्र की तरह व्यवहार करते थे। एक दिन महाराजा घोड़े पर सवार होकर सैर के लिये निकले। श्री अरविन्द भी उसी दिशा में जा रहे थे। रास्ते में एक बुढ़िया मिली जो गोबर का टोकरा लिये खड़ी थी, उसे ऊपर उठाना बुढ़िया के बस का काम न था। बुढ़िया ने सामने से आते हुए घुड़सवार को देखा और बोली, **'ए भाई, जरा मेरी टोकरी उठा देना।'** सयाजी राव घोड़े पर से कूद पड़े और बुढिया की टोकरी उसके सिर पर चढ़ा दी और वह उन्हें निहारती हुई चली गयी, लेकिन उसके जाने से पहले महाराजा ने उसका अता-पता पूछ लिया।

महाराजा ने पीछे मुड़कर देखा तो श्रीअरविन्द उनकी तरफ देखकर मुस्करा रहे थे। महाराजा ने कारण पूछा तो उन्होंने कोई जवाब न दिया। उन्होंने फिर सवाल किया तो उनका आग्रह देखकर श्री अरविन्द ने कहा, **''मैं इस बात पर मुस्कराया कि बड़ौदा के महाराजा को गरीबों पर भार चढ़ाना चाहिए या उतारना?''** महाराजा, उनका उद्‌देश्य ताड़ गये और दूसरे दिन सवेरे ही सवेरे बुढ़िया को दरबार में बुलाया गया। वह हांफती-कांपती, डरी हुई दरबार में पहुँची तो देखा कि कल का घुड़सवार यहाँ सिंहासन पर बैठा है। महाराजा ने बड़े प्रेम के साथ उससे बातचीत की, उसकी स्थिति का पता किया और उसके पालन-पोषण की उचित व्यवस्था कर दी और उसके लिये एक मकान भी बनवा दिया।

एक समय था जब राजनीतिज्ञ लोग सामने वाले की भावना को परख लेते थे और आज स्थिति बिलकुल विपरीत है। चाहे कितना ही शोर मचाओ, कोई नहीं सुनता है। वे जो कर रहे हैं, उससे उनको कोई डर नहीं है-कार्य सही है या गलत। अब आध्यात्मिक चेतना ही संपूर्ण मानव जाति में परिवर्तन ला सकती है।

श्री अरविन्द

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

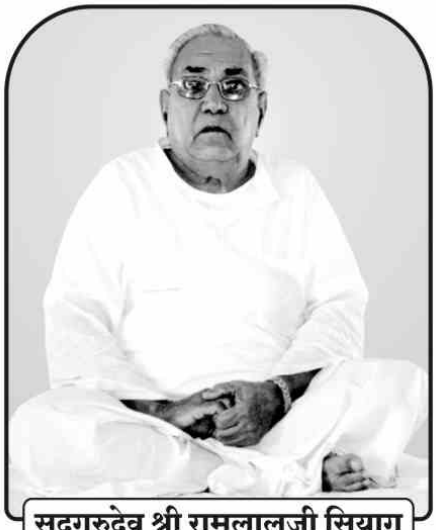

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org | E-mail : avsk@the-comforter.org

कोटा

हर्षोल्लास से मनाया गुरु सियाग का अवतरण दिवस

कोटा 24 नवम्बर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान में आज रविवार को समर्थ सद्गुरुदेव संत रामलाल सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस कोटा शाखा के माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व मे धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुन्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरु रामलालजी सियाग की तस्वीर की पूजा-अर्चना के साथ हुआ। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचन्द शर्मा ने सन्त रामलालजी सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर साधकों की उपस्थिति मे पूजा-अर्चना एवं आरती की। इसके पश्चात आश्रम के साधकों से खचाखच भरे हॉल मे ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरुदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत संजीवनी मंत्र का जाप एवं गुरुदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पतन्जली के दर्शन में वर्णित स्वतः ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्रायें लगने से यौगिक क्रियायें होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के पश्चात साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया तथा इसमें सैकड़ों की संख्या में नए साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर मे लगभग हाड़ौती संभाग के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस अवसर पर आयोजित भण्डारे मे भोजन प्रसादी ग्रहण करते हुए आश्रम की दीक्षा सहित समस्त गतिविधियों मे भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजिनियर खुशहाल बाबा ने दी, इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया जो कि अब वितरण के लिये शाखा कोटा पर उपलब्ध रहेगा।

शेष अन्तिम पेज पर...

गुरुदेव रामलाल सिहाग का मनाया अवतरण दिवस

सैकड़ो साधकों ने ली दीक्षा

कोटा, 24 नवंबर। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर शाखा कोटा के तत्वावधान में आज रविवार को समर्थ सतगुरु देव संत रामलाल सियाग का 94 वा अवतरण दिवस कोटा शाखा के सीनता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व में धार्मिक क्रांति के प्रणेता एवं सिद्धियोग के जनक, कुंडलिनी महाविज्ञान के समर्थ सद्गुरु रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ।

कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खंडेलवाल और हरक चंद शर्मा ने संत श्री रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर हजारो साधको की उपस्थिति में पूजा अर्चना एवं आरती की। इसके पश्चात आश्रम के साधको ने अपने अंदर असीम शांति का अनुभव किया तथा इसमें सैकड़ों की संख्या में नए साधको ने दीक्षा भी ली। दिन भर में लगभग संभाग के 2000 से अधिक साधको ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस

शेष अन्तिम पेज पर...

कार्यक्रम का संचालन जाकिर खान उपस्थित रहे।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र में लगाया ध्यान

कोटा | अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की कोटा माइल स्टोन रेजीडेन्सी के पास सीन्ता स्थित आश्रम में रविवार को समर्थ सद्गुरुदेव संत रामलाल सियाग का 94वा अवतरण दिवस श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया गया। सप्ताहांत की शुरुआत विश्व में धार्मिक क्रान्ति के प्रणेता एवं सिद्धयोग के जनक, कुण्डलिनी महाविज्ञान के समर्थ गुरू रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा-अर्चना के साथ हुई। कोटा शाखा अध्यक्ष पदम जैन, साधक राकेश खण्डेलवाल, हरकचन्द शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर पूजा-अर्चना की, आरती भी की। इसके बाद आश्रम सभागार में ध्यान योग कार्यक्रम हुआ। शाखा के प्रवक्ता राजेश गौतम ने बताया कि हाड़ौती के लगभग 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया। बाद में हुए भण्डारे में प्रसादी पाई। संचालन इंजीनियर खुशहाल बाबा ने दी। 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

दैनिक भास्कर

अवतरण दिवस मनाया : सीता स्थित आध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र पर रविवार को संत रामलाल सियाग का अवतरण दिवस मनाया। इस मौके पर सत्संग, भजन व ध्यान योग के कार्यक्रम हुए। आश्रम की ओर से राजेश गौतम ने बताया कि लोगों ने ध्यान लगाया। प्रारंभ में चरण पादुका पूजन किया। शहर व ग्रामीण इलाकों से बड़ी संख्या में लोग आए।

राजस्थान पत्रिका

सद्गुरू संत रामलाल सियाग का अवतरण दिवस मनाया

संदेश न्यूज। कोटा.

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र जोधपुर, शाखा कोटा के तत्वावधान में रविवार को सद्गुरुदेव संत रामलाल सियाग का 94वाँ अवतरण दिवस कोटा शाखा के सीन्ता स्थित आश्रम में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कोटा शाखा के कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ रामलाल सियाग की तस्वीर की पूजा अर्चना के साथ हुआ।

कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन, परम साधक राकेश खण्डेलवाल और हरकचंद शर्मा ने सन्त रामलाल सियाग की चरण पादुका का प्रक्षालन कर साधकों की उपस्थिति में पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। इसके बाद आश्रम के साधकों से खचाखच भरे हॉल में ध्यान का कार्यक्रम हुआ। ध्यान के दौरान साधकों ने गुरुदेव द्वारा दीक्षा में प्रदत संजीवनी मंत्र का जाप कर गुरुदेव की फोटो का ध्यान किया तो वेदों में वर्णित कुण्डलिनी महाविज्ञान के अनुसार महर्षि पातन्जली के दर्शन में वर्णित स्वतः ही आसन, बन्ध, प्राणायाम एवं मुद्राएं लगने से यौगिक क्रियाएं होने लगी। 15 मिनट के ध्यान के बाद साधकों ने अपने अन्दर असीम शान्ति का अनुभव किया तथा इसमें सैकड़ों की संख्या में नए साधकों ने दीक्षा भी ली। दिनभर में लगभग संभाग के 2000 से अधिक साधकों ने गुरुदेव की तस्वीर के समक्ष ध्यान लगाया तथा इस अवसर पर आयोजित भण्डारे में भोजन प्रसादी ग्रहण करते हुए आश्रम की दीक्षा सहित समस्त गतिविधियों मे भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सिद्धयोग दर्शन की जानकारी इंजीनियर खुशहाल बाबा ने दी, इस अवसर पर संस्था के 2020 के कैलेण्डर का विमोचन भी किया, जो कि अब वितरण के लिए शाखा कोटा पर उपलब्ध रहेगा।

RNI No. 28286/74 *कार्यकारी संपादक: श्रेयस शर्मा M. 8852000757 *पीआरबी एक्ट के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी (सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र कोटा)

दैनिक भास्कर | 25-Nov-2019 कोटा जिला Page 2

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र में साधकों ने लगाया ध्यान, अवतरण दिवस मनाया

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केंद्र की ओर से सीता स्थित आश्रम में आयोजन

गुरुदेव के अवतरण दिवस पर सजाई गई रंगोली झांकी।

गोटा आश्रम में ध्यान लगाते हुए साधक।

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अतिमानव का अवतरण निश्चित

जगत् की बुरी दशा के बारे में, मैं पहले ही कह चुका हूँ। इस संबंध में गुह्य-वेताओं का साधारण विचार यह है कि दशा जितनी ही अधिक बुरी होती है, ऊपर से दिव्य हस्तक्षेप का होना या नवीर प्रकाश का आना उतना ही अधिक संभव होता है। साधारण मन को इस बात का पता नहीं चल सकता-उसके लिये बस यही चारा है कि या तो वह इस बात पर विश्वास करे या न करे अथवा प्रतीक्षा करे और राह देखता रहे।

अब रहा यह प्रश्न कि क्या भगवान् सचमुच ही चाहते हैं कि ऐसा कुछ घटित हो। इस बारे में मेरा विश्वास है कि उन्हें यह अभिमत है। मुझे पूरी तरह से, निश्चित रूप से, मालूम है कि अतिमानव एक सत्य है और जगत् की वस्तुस्थिति को देखते हुए, उसका यहाँ आना अवश्यंभावी है। प्रश्न तो बस केवल कब और कैसे का है। और वह भी कही ऊपर से निश्चित और पूर्व-निर्धारित हो चुका है। परन्तु उसकी प्राप्ति के लिये यहाँ विरोधी शक्तियों के बीच घमासान लड़ाई चल रही है, क्योंकि पार्थिव जगत् में वह ''पूर्व-निर्धारित'' परिणाम छिपा हुआ है। और यहाँ जो कुछ हम देखते हैं, वह तो संभावनाओं तथा शक्तियों का भँवर ही है और वे संभावनाएँ एवं शक्तियाँ किसी चीज की प्राप्ति के लिये यत्न कर रही है पर इस सबका भविष्य मनुष्य की दृष्टि से ओझल है तो भी इतना निश्चित है कि कुछ एक आत्माएँ इसलिये भेजी गई हैं कि वह अभी सिद्ध हो जाय। बस, वस्तुस्थिति यही है। मेरी श्रद्धा और संकल्प इसी ओर है कि यह अभी सिद्ध हो। अवश्य ही, यह सब मैं मानवीय बुद्धि के धरातल से ही कह रहा हूँ, या यूँ कहें कि गुह्य-बौद्धिक शैली से कह रहा हूँ। इससे अधिक कहना विषय की सीमा को पार करना होगा।

संदर्भ-महर्षि श्री अरविन्द, 'अपने विषय में' पृष्ठ-187

'अतिमानव' की शक्ति का मानव जाति को आंतरिक आभास तभी होगा, जब भीतर से वे गहरी पुकार करेंगे।

www.the-comforter.org

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी